जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२७ अंक -८ अप्रैल २०२५ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ५२ मूल्य - १५० रूपए प्रति

हम सब जैन है श्वेताम्बर जैन दिगम्बर हम सब जैन है

तीर्थंकर महावीर

जन्म कल्याणक पर्व पर कोटि-कोटि वंदन्!

We are your

3R implementation

partner

Reduce

Reduce socpe 3 emissions with certified Green Steel.
Cut emissions from reverse logistics.

MTC GROUP™

METTLE MAKES US

India's leader in sustainable metal solutions

- Scrap trading
- Ferro alloys
- Metal manufacturing
- Demolition and dismantling
- ELV, e-waste & plastic recycling
- Automobile retail

Recycle
Simplify management of major dry industrial waste across 8+ categories.

Reuse
Maximize reuse of high-value downstream materials (30-40%) reused)

UK USA UAE. SINGAPORE
www.mtcgroup.in

Mahavir Jayanti – Towards Enlightenment & Inner Peace

RSM Astute Consulting Group

- RSM Astute Consulting Group, along with its affiliates (together referred as 'RSM India'), has been ranked amongst **India's top 6 accounting, tax and consulting groups** [International Accounting Bulletins]
- Indian member of **RSM International,** the world's 6th largest accounting, tax and consulting network with global revenue of US$ 10 billion (Rs. 86,000 crores)
- Largest first-generation home-grown firm in the top 10 in India Founded by Dr. Suresh Surana, the Group is one of the prominent Jain groups in the **Knowledge Business**
- Core services include Internal Audits & Risk Advisory, Corporate Tax & GST, IT Systems Assurance & Solutions and Operations Consulting
- Clients include several large Indian groups, multinational corporations and first-generation entrepreneurs

Founded
1985

Personnel
3,000+

India offices
13

6th Largest Accounting, Tax & Consulting Firm

Mumbai Offices

Nariman Point: 8th Floor, Bakhtawar, 229, Nariman Point, Mumbai - 400 021

Andheri: 3rd Floor, Technopolis Knowledge Park, Mahakali Caves Road, Andheri (E), Mumbai 400 093

Tel: (91-22) 6121 4444 / 6108 5555 **Fax:** (91-22) 6108 5556 **Emails:** emails@rsmindia.in **URL:** www.rsmindia.in

Offices: New Delhi (NCR) * Chennai * Kolkata * Bengaluru * Surat * Hyderabad * Ahmedabad* Gandhidham * Pune * Jaipur * Vijayanagar * Navi Mumbai

RSM

शासनपति श्रमण भगवान महावीर स्वामी के जन्मोत्सव पर विनम्र भाववंदना!

श्रद्धेय भवरलाल हिरालाल जैन

दलिचंद–लिलाबाई, श्रीमती ताराबाई, श्रीमती शकुंतला, श्रीमती सुनंदा, अशोक–ज्योती
विजय–निर्मला, राहुल–दर्शना, अनिल–निशा, अजित–शोभना, अतुल–भावना, अथांग–अंबिका
अभेद्य, आशुली, आरोही, अभंग, आत्मन, अन्मय, अर्थम, अथिना

एवं समस्त जैन (चोरडिया) परिवार

भवरलाल ॲण्ड कांताबाई जैन फौंडेशन, जलगाँव
करुणा.. कल्पना.. कष्ट!

जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि.™
छोटे छोटे कदम. आसमाँ छुनेका दम.®

अनुभूति स्कूल
अनुभवाधारित निवासी आंतरराष्ट्रीय विद्यानिकेतन

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन
• सत्य • अहिंसा • शांती

जैन हिल्स्, जलगाव-४२५००१, ई-मेल: jisl@jains.com; वेबसाईट: www.jains.com

भारत • अमेरिका • मेक्सिको • ग्वाटेमाला • पेरू • चिली • ब्राझील • आयर्लंड • युनायटेड किंगडम • बेल्जियम • रुमानिया • दक्षिण आफ्रिका
फ्रान्स • स्पेन • इटली • टर्की • इस्त्रायल • ऑस्ट्रेलिया • रशिया • चीन • ग्रीस • सिंगापूर (यूएई) • अर्जेंटिना • फ्रेस्नो • फिलीपिन्स

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

Tariff Card

Monthly Magazine
JINAGAM

Reader Ship
17,000

Readers
All Jains

Release Date
10th date of Every Month

Magazine Size
A4

Print Area
19cm x 24 cm

Print in
Art Paper/Card

विज्ञापन दर 1st November 2022

ADVERTISEMENT RATE

Front Cover (With Photo/Sponsorship) Size : 185 x 225 mm	55,000/	+ 5% GST
Front Page (Cover Inside) Size : 185 x 225 mm	33,000/	+ 5% GST
Back Page (Cover) Size : 185 x 225 mm	35,000/	+ 5% GST
Back Page (Inside Cover) Size : 185 x 225 mm	31,000/-	+ 5% GST
Opening of Magazine/3rd Page Size : 185 x 225 mm	32,000/-	+ 5% GST
Centre Page Size : 185 x 225 mm	40,000/-	+ 5% GST
Special Position on Editorial Page (if available) Quarter Page / Strip) Size : 185 x 50 mm	8,000/-	+ 5% GST
Full Page (Inside) Size : 185 x 225 mm	22,000/-	+ 5% GST
Half Page Size : 185 x 110 mm	12,000/-	+ 5% GST
Quarter Page Size : 90 x 110 mm	6,000/-	+ 5% GST

* Per Insertion

अगला अंक

जैन एकता

FOR FRANCHISEE & INSTITUTIONAL ENQUIRY CALL: 8657939718 022-269014400
OR EMAIL AT FRANCHISEE@KEWALKIRAN.COM | WWW.KILLERJEANS.COM

A LIFESTYLE BRAND FROM KKCL KEWAL KIRAN CLOTHING LIMITED

FOLLOW US ON:

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

२८ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२७, अंक ८, अप्रैल २०२५

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
जिनागम
समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

सम्पादक - बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को भारत ही कहा जाए
का आह्वान करने वाला एक भारतीय

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)
मो: ९७०२२ ०५२५२

- 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/ समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-४०१५८०९४
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

कृपया विज्ञापन बिल सदस्यता की राशि का भुगतान नीचे दिये गए बैंक में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

श्वेताम्बर दिगम्बर • **सम्पादकीय** • दिगम्बर श्वेताम्बर

जीतो ने रचा इतिहास

जैन धर्म में 'नवकार महामंत्र' का गुणगान अति श्रद्धापूर्वक किया गया है, लिखा गया है, जिस किसी ने 'महामंत्र' का गुणगान किया, उसे आत्मशांति तो प्राप्त होती ही है, साथ ही वातावरण में भी शुद्धता अपने आप हो जाती है, इंसान तो क्या पशु-पक्षी भी मंत्र मुग्ध हो जाते हैं, ऐसी शक्ति से भरा है 'णमोकार मंत्र'...

जैन समाज के विशेष व चारों पंथ के धर्मावलंबियों द्वारा स्थापित जैन इंटरनेशनल ट्रेड आर्गेनाइजेशन 'जीतो' ने जैन धर्म के उत्थान पर व प्रचार प्रसार के लिए, श्रमण आरोग्यम, हर एक के लिए शिक्षा जरूरी आदि आदि कई ऐसी सोच व कार्यों से जैन समाज की कीर्ति विश्व में संपादित की है, इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए ९ अप्रैल २०२५ को 'विश्व नवकार महामंत्र' का आयोजन कर बता दिया कि 'नवकार महामंत्र' का गुणगान या जिसने भी जपा व सुख समृद्धि एवं आत्मा से सुखी हो गया, क्योंकि 'नवकार' में इतने गुण हैं, जिनकी व्याख्या शब्दों में लिखी भी नहीं जा सकती, ऐसे उद्यम कार्य की सोच व आयोजन कर 'जीतो' ने विश्व को बता दिया कि वर्तमान में फैली विश्व अशांति को शांति के पथ पर 'णमोकार मंत्र' के भावों को समझ कर ही चला जा सकता है।

१० अप्रैल २०२५ 'महावीर जनकल्याणक पर्व' विश्व में फैले जैन धर्मावलंबियों ने मिलकर मनाया, हर मंदिर, स्थानक, भवन, चैत्यालय आदि के साथ निवास स्थल, कार्यालय में धूमधाम से मनाया, साथ विश्व शांति रहने का भी उद्घोष भी किया।

जैन धर्म को अहिंसा धर्म बताते हुए महावीर स्वामी ने कहा था कि विश्व को शांति व उत्साह से विकास करना है तो 'अहिंसा' ही एकमात्र साधन है, जिससे विश्व की प्रगति संभव है, हिंसा तो मिथ्या है, जिससे सर्वनाश का रास्ता ही तय किया जा सकता है।

जैन धर्म के २४ वें तीर्थंकर महावीर स्वामी का जन्म पर्व यानी 'कल्याणक' हर जैन परिवारों ने मनाकर अपनी आत्मा को शांतिमय तो बनाया ही, साथ विश्व कल्याण की परिकल्पना कर चहूं दिशाओं में शांति के लिए भी प्रार्थना की।

समस्त जैन पंथों की एकमात्र पत्रिका 'जिनागम' के प्रबुद्ध पाठकों को 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं! जय जिनेंद्र! जय भारत!

SBI
for payment

HDFC BANK
for payment

आपका अपना जैन एकता का सिपाही
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत ही कहा जाए
का आह्वान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें

Neelam®
Since 1972

India Set Hai

Relish the taste of home everywhere you roam

Wherever life takes you - picnics, long drives, or work trips, some things should always travel with you. Like the taste of home and the joy of sharing meals.

TRAVELLING SET
26 PCS

www.neelamsteel.com | @neelamsteel

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

RHJ
Since 1961

RAMESHKUMAR HAMERLAL JAIN

TOTAL METAL RECYCLERS
DEVELOPERS, MINING & MFG. METAL SALTS

EXTRUDERS OF COPPER & COPPER ALLOYS,
ALUMINIUM & ALUMINIUM ALLOYS

● Head Office ●

I I I/119, Thakurdwar Road, Mumbai - 400 002.
Tel. 2201 3540, 2206 9972
E-mail info@rhjmetals.com

● Corporate Office ●

A-55, New Empire Industrial Estate,
Kondivita Road, Opp. Regent Hotel,
J.B. Nagar, Andheri (E), Mumbai - 400 059
Tel.: 4973 2016 I 4973 2017

ASSOCIATE CONCERNS

RHJ Industries Pvt. Ltd.
RHJ Metals Pvt. Ltd.
Dhakad Metal Corporation
Sameer Industries
D.B. Granites

Spring/
SUMMER
collection'25
NOW IN STORE
DUKE
TRULY INDIAN SINCE 1966
www.dukeindia.com
APPARELS | FOOTWEAR | ACCESSORIES
follow us on:

भगवान महावीर के 2550वें निर्वाण कल्याणक वर्ष
एवम् महावीर जयन्ती की हार्दिक शुभकामनाएं।

Shop Online :

T.T.
bazaar
Family Fashion Store

INNER WEAR | CASUAL WEAR | SPORTS WEAR - MEN, WOMEN & KIDS

To open an Exclusive T.T. Bazaar Store : +91 73032 24027

For Inquiries T.T. Ltd. : Poddar House, 71/2C, Rama Road, Moti Nagar, New Delhi - 110015

Tel. : +91 11 45060708 | E-mail : sales-m@ttlimited.co.in | Web. : www.ttlimited.co.in

!! भगवान महावीर की जय !!

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर

हार्दिक शुभकामनाएं

परस्परोपग्रहो जीवानाम

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
श्री महावीरजी, जिला करौली, राजस्थान, भारत

सुधांशु कासलीवाल

वरिष्ठ अधिवक्ता, राजस्थान उच्च न्यायालय
अध्यक्ष, प्रबन्धकारिणी कमेटी,
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
जयपुर निवासी, भ्रमणध्वनि: ९८२९०५००६७

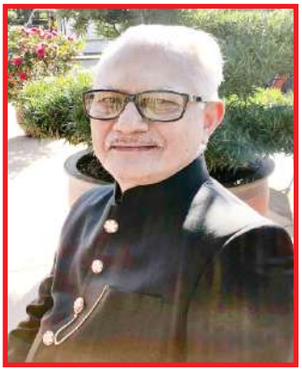

सुभाष चन्द जैन

मानद मंत्री, प्रबन्धकारिणी कमेर्ट,
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, श्री महावीरजी
भ्रमणध्वनि: ९८२९०६६४३८

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

महावीर की अहिंसा

सामान्यत: हिंसा एवं अहिंसा का सम्बन्ध दूसरों से ही जोड़ा जाता है दूसरों की हिंसा मत करो, बस यही अहिंसा है, किन्तु यह एकांगी दृष्टिकोण है। स्वयं द्वारा भी हिंसा होती है, इस ओर बहुत कम लोगों का ध्यान जाता है जिनका ध्यान जाता भी है तो वे भी आत्महिंसा का अर्थ आत्मघात अथवा आत्महत्या ही मानते हैं, उसकी गहराई तक पहुँचने का प्रयत्न नहीं करते! अन्तर में राग-द्वेष-मोह की उत्पत्ति होना भी हिंसा है, लोग इस सन्दर्भ में न विचार करते हैं और न ही जानते हैं। प्रसिद्ध जैनाचार्य अमृतचन्द ने अन्तरंग पक्ष को लक्ष्य में रखते हुये अहिंसा की निम्नलिखित परिभाषा दी है-

अप्रादुर्भाव: खलु रागादीनां भवत्यहिंसेति
तेषामेवोत्पत्तिहिंसेति जिनागमस्य संक्षेप:

आत्मा में राग-द्वेष-मोहादि भावों की उत्पत्ति होना ही हिंसा है और इन भावों का आत्मा में उत्पन्न नहीं होना ही अहिंसा है, यही 'जिनागम' का सार है।

अहिंसा के विकास में आत्मौपम्य भाव का विकास होता है, अपने पराये की भेद रेखा समाप्त होती है, अभय का भाव जगता है तथा प्रतिकूल परिस्थिति में भी आत्मविश्वास की लौ मंद नहीं होती, ऐसा व्यक्ति संवेदनशील होगा, उसके आस्था का सूत्र होगा - 'आयतुले पयासू' संसार के सब प्राणी समान है तथा प्राणी मात्र के प्रति मैत्री भावना का विकास करना होगा, अनावश्यक हिंसा के प्रति दृष्टिकोण बदलने का अर्थ होगा - पर्यावरण प्रदूषण से बचाव, अहिंसा के बिना सृष्टि संतुलन की सम्भावना नहीं है। जैन धर्म समप्रधान धर्म है, संसार के सभी प्राणियों में चैतन्यगत समानता है तथा शांति जीवन का सार है 'मित्ती मे सव्वभूएसु' ही व्यक्ति का आस्था सूत्र होगा, यानी सब प्राणियों के साथ मैत्री सम्बन्ध स्थापित कर वह शत्रुता के संसार से ऊपर उठ जायेगा।

जैन दर्शन के अनुसार मरण व जन्म एक प्रकृति द्वारा स्थापित सत्य है। शरीरधारी जीव अमर नहीं है या तो वह स्वयं मरता है या दूसरे प्राणियों द्वारा मार डाला जाता है, इस रूप में यदि मृत्यु को हिंसा माना जाये तो कभी भी हिंसा की समाप्ति नहीं होगी, किन्तु हम प्रत्येक मृत्यु को हिंसा नहीं कह सकते, न ही सहज जीवन को अहिंसा कह सकते हैं, उदाहरण के लिये बाढ़, भूकम्प आदि प्राकृतिक कारणों से हजारों प्राणी मर जाते हैं किन्तु उसे हिंसा के अन्तर्गत नहीं लिया जाता, इसी तरह न मरना हिंसा है और न ही जीना अहिंसा है। जीवों का मरण वस्तुत: आयु कर्म के क्षय से होता है। स्पष्ट है कि हिंसा अहिंसा जड़ में नहीं होती, जड़ के कारण भी नहीं होती, उसकी उत्पत्ति स्थान व कारण दोनों ही चेतन में विद्यमान है क्योंकि हिंसा व अहिंसा का सम्बन्ध सीधा आत्मपरिणामों से है, वे दोनों आत्मा के ही विकारी - अविकारी परिणाम हैं, जड़ में इनका जन्म नहीं होता, उदाहरण के लिये यदि किसी प्राणी पर पत्थर गिर जाये तथा उसकी मृत्यु हो जाये तो उस पत्थर के कारण हिंसा नहीं होती, किन्तु कोई प्राणी किसी को मारने का विकल्प करे तो उससे हिंसा अवश्य होगी चाहे वह प्राणी मरे या न मरे, इससे ऊपर कही हुई बात स्पष्ट हो जाती है कि हिंसा या अहिंसा जड़ में न होकर चेतन में विद्यमान है। आत्मा के शुद्ध परिणामों के घात होने से झूठ, चोरी आदि सभी हिंसा है, स्पष्ट है कि हिंसा, अहिंसा का सम्बन्ध परजीवों के जीवन-मरण, सुख-दु:ख से न होकर आत्मा में उत्पन्न होने वाले राग, द्वेष, मोह परिणामों से है, किन्तु दूसरे के कारण आत्मा में हिंसा उत्पन्न नहीं होती है।

परिग्रह हिंसा का कारण है, अत: परिग्रह को छोड़ देना चाहिये। महावीर ने अहिंसा के व्यापक रूप को रखा है, जिसमें अपरिग्रह तथा अनेकान्त सम्मिलित है, जिसे हम व्यवहार की अहिंसा व विचार की अहिंसा के सन्दर्भ में समझ सकते हैं। हिंसा को दो भेद के आधार पर समझाया गया है भाव हिंसा एवं द्रव्य हिंसा - रागादि भावों के उत्पन्न होने पर आत्मा के उपयोग की शुद्धता का घात होता है, यह ही भाव हिंसा है जबकि अपने और पराये द्रव्य प्राणों का घात होना द्रव्य हिंसा है, जैसे किसी को सताना-दु:ख देना तो हिंसा है ही, क्योंकि उसमें प्रमाद का योग रहता है, प्रमाद के योग से द्रव्य और भाव प्राणों का घात होना हिंसा है, प्रमाद से आशय मोह-राग-द्वेष आदि विकारों से है, सामान्यत: हमारा ध्यान बाह्य हिंसा पर केन्द्रित होता है अन्तरंग में होने वाली भाव हिंसा की ओर हमारा ध्यान नहीं जाता, यदि इस रूप में हम हिंसा का पूर्ण त्याग नहीं कर सकते तो हम उसे कम तो कर सकते हैं, राग जितना घटे, उतना ही अच्छा है, धर्म तो राग-द्वेष-मोह का अभाव ही है तथा यही अहिंसा है जैसे परम धर्म कहा जाता है, अहिंसा में मूलरूप में एकता है यद्यपि अहिंसा को जीवन में उतारने के कई स्तर हो सकते हैं, यानी यदि हम पूर्णत: हिंसा का त्याग नहीं कर सकते तो अंशत: त्याग करना चाहिये। हिंसा की परिभाषा में राग की उत्पत्ति मात्र को हिंसा बताया गया है, अत: सब प्रकार के राग, हिंसा स्वरूप ही होता है। ममता, प्रेम, मोह सभी अहिंसा, तो वीतराग परिणति का नाम है, शुभाशुभ राग का नाम नहीं, चाहे मारने का भाव हो या बचाने का- भावबन्ध होने से यह धर्म नहीं है, धर्म बन्ध का अभाव है, अत: वीतराग भाव ही अहिंसा है - वस्तु का स्वभाव होने से वही धर्म है - मुक्ति का कारण भी वही है।

राग आदि से जीव भारी हो जाता है कवि नीरज ने भी यही लिखा है

''तन से भारी सांस है, इसे समझ लो खूब
मुर्दा जल में तैरता, जिन्दा जाता डूब''

हमारा जीवन हिंसा की स्मृति से भारी हो जाता **शेष पृष्ठ १३ पर ...**

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

PRADEEP KUMAR BHANSALI
9840419164
VIVEK BHANSALI 9840400095
GRISHA VENTURES
1/870, Harichandran Street, Padiyanallur, Redhills,
Chennai, Tamil Nadu, Bharat-600052
Email : info.grishaventures0 gmail.com
ROHIT BHANSALI 9566121500
ROYAL PLAST
Manufacturers Of Plastic Recycled Granules
No.100, Redhills Dharkas Road, Athivakkam, Redhills,
Chennai, Tamil Nadu, Bharat-600 052.
Email : royalplastchennai@gmail.com

अहंकार महाअग्नि है,
जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Vinod Jain
Director
Mob: 9837013858
Vineet Jain
Mob: 9837083893
ALLEGIANCE OVERSEAS
A BSCI and CT-PAT Compliance Organisation
A Govt. Recognised Export House
6-7, Sector-3, Vibhav Nagar, Firozabad,
Uttar Pradesh, Bharat - 283203
Email: office@allegiance-overseas.com
B-12/15 Expo Mart, Greater Noida, Bharat - 201310
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

पृष्ठ १२ से ... है इसे दूसरे शब्दों में इस तरह रखा गया है-

''जीव भारी होता है हिंसा की स्मृति से, जिन कर्मों के उदय से, जिन संस्कारों की स्मृति से कोई हिंसा करता है, वह संस्कार-स्मृति हिंसा का मूल है। हिंसा की स्मृति ही वास्तविक हिंसा है, क्रियमाण हिंसा उतनी बड़ी नहीं है। हिंसा के संस्कार की स्मृति बड़ी हिंसा है, वही हमें भारी बनाती है, हमारे कार्यों का भार उतना नहीं होता, जितना कि स्मृति और कल्पना का होता है। हम मन, वचन, काया से भारी हो जाते हैं, यदि मन में हिंसा का संस्कार न हो और हिंसा का संस्कार स्मृति रूप में जाग्रत न हो तो वर्तमान की हिंसा संभव ही नहीं है, जो भी वर्तमान में हिंसा कर रहा है, उसके मन में हिंसा का संस्कार है. उस हिंसा के संस्कार की स्मृति जाग्रत हो रही है, अत: हिंसा का मूल वर्तमान घटना से ज्यादा हिंसा की स्मृति है, घटना तो परिणाम है।''

''हमारी चेतना जैसे-जैसे जाग्रत होगी, ऊपर उठेगी, हिंसा स्वत: समाप्त हो जाएगी, हिंसा छोड़ने से समाप्त नहीं होती, करने से समाप्त नहीं होती, केवल चेतना के जागरण से समाप्त होती है, उसमें हिंसा का संस्कार समाप्त हो जाता है, न स्मृति रहती है, न ही घटना. हमारी भौतिकता के तल में छिपी हुई कोई ऐसी प्रखर ज्योति है जो निर्णय ले रही है और वह निर्णय हमारे बाहर तक पहुँच रहा है, भीतर हमारा अस्तित्व होता है- 'मैं हूँ बाहर' हमारा व्यक्तित्व रहता है- 'मैं' विशिष्ट हूँ. 'मैं' सदा बाहर देखता 'हूँ- भीतर देखता है''

''उपरोक्त कथन में अहिंसा के व्यापक सन्दर्भ में चिन्तन प्रस्तुत किया गया है क्या हम अपने आप के लिये भी हिंसक हो सकते हैं यानी क्या हम आत्महिंसक हो सकते हैं जो हम होते हैं जब हम दूसरों के सम्मुख कमजोर पड़ कर खुद को सताते हैं, कल्पना में ही हम बदला लेते हैं तथा स्वयं को कड़वेपन में डूबो लेते हैं, व्यक्ति में इच्छायें अनन्त होती है जो सत रज तम गुणों के आधार पर कार्य करती है प्रश्न यह है कि ईच्छाओं को सत की ओर कैसे मोड़ा जाये?''

महावीर ने अहिंसा की दार्शनिक ही नहीं, व्यवहारिक आधार पर भी व्याख्या की है, अहिंसा आत्मा की परिशुद्ध स्थिति है जिसमें राग, द्वेष, मान, माया नहीं है और न ही सुख की मृग मरीचिका के पीछे भागने के लिए किसी तरह की उठा-पठक है, अपितु समत्व की भावना पर अहिंसा का विचार टिका हुआ है। समत्व यानी शत्रु व मित्र को समान स्तर पर रखना, मित्र और शत्रु के प्रति समत्व भाव ही अहिंसा है, जिसके कारण मनुष्य वीतराग स्वरूप को प्राप्त करता है। ब्रह्मानन्द एवं चरम सत्य की प्राप्ति होती है, यह ही अहिंसा का उद्यत रूप है.

सरल भाषा में कहा जाये तो अहिंसा राग विराग से दूर जीवन को अमृतमय बनाती है किसी भी प्राणी के प्रति विद्वेष के भाव से विद्वेष रखने वाले व्यक्ति को ही सबसे अधिक हानि होती है, क्योंकि विद्वेष रखने से हम अपने जीवन की सहजता, प्रफुल्लता तथा आनन्द जैसे भावों से वंचित हो जाते है। राग द्वेष से स्वयं के भाव दूषित हो जाते हैं। महावीर ने केवल किसी के प्रति विद्वेष को ही हिंसा नहीं माना है अपितु किसी के प्रति राग एवं मोह को भी हिंसा माना है जो स्वयं अपने प्रति हिंसा है- जो हमें सत्य को प्राप्त करने से रोकता है, पूर्वाग्रहों से युक्त होने के कारण कषाय के भाव मन में आते हैं, अत: मित्र व शत्रु के प्रति समत्व भाव को जैन दर्शन में अहिंसा की संज्ञा दी गई है। अहिंसा मन, वचन और कर्म की समता **शेष पृष्ठ १४ पर...**

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १३ से ... की स्थिति है, अहिंसा हिंसा का अभाव नहीं अपितु अहिंसा सकारात्मक है।

महावीर की अहिंसा वैयक्तिक है, किन्तु सामाजिक सन्दर्भ में ही अहिंसा का सिद्धान्त रखा गया है, सामाजिक जीवन में विषमता के रहते अहिंसा नहीं पनप सकती अत: अहिंसा के वैयक्तिक प्रयोग के लिए जीवन में समन्वयवृत्ति सहअस्तित्व की भावना एवं सहिष्णुता जैसी सामाजिक भावनाओं का होना आवश्यक है।

अहिंसा के रूपों को मन, वचन और कर्म के सन्दर्भ में देखा जा सकता है, किसी के प्रति भी ममत्व या द्वेष के विकारपूर्ण भाव हिंसा है, स्वयं के प्रति भी और दूसरों के प्रति भी- इसी तरह वाणी की हिंसा घर परिवार और समाज को बिखेर देती है। मन की हिंसा का प्रभाव सम्बन्धित व्यक्ति तक सीमित होता है किन्तु वाणी की हिंसा घर-परिवार और विश्व के लिए घातक सिद्ध होता है, मन और वाणी की अहिंसा कर्म की अहिंसा से जुड़ी है। महाभारत का युद्ध इसका उदाहरण है, कर्म की अहिंसा व्यक्ति की जीवनशैली को अहिंसक बनाती है, व्यक्ति की जीवनचर्या अहिंसक बन जाती है, जैनियों में अहिंसा के सिद्धान्त को आचरण में अपना लिया गया है। जैनी निरामिष खान-पान जीव-रक्षा, दया-दान की भावना से अनुप्राणित होकर अहिंसा के सिद्धान्त को अपने जीवन में अपना लेते हैं, मन, वचन और कर्म तीनों की अहिंसा माना गया है।

जीवनशैली के रूप में अहिंसा की अभिव्यक्ति अनेकान्त, स्यादवाद तथा अपरिग्रह के रूप में हुई है। अनेकान्त वाणी की अहिंसा का उद्यत रूप है, जो अहिंसा को समन्वयवादी दृष्टिकोण से समाहित करता है। परस्पर विरोधी विभिन्न विचारधारा को भी सत्य के विभिन्न पक्षों की अभिव्यक्ति कहकर वाणी की व्यैक्तिक स्वतंत्रता को सर्वोच्चता प्रदान की गई है। महावीर ने अनेकान्त की मर्यादा से अहिंसा को विराट बनाया है, सत्य के रूपों में विराटता को परिलक्षित करते हुये सम्यकत्व की खोज में आधार माना है। संकीर्ण विचारों से ऊपर उठकर संभावनाओं के आलोक में व्यक्ति कट्टरपंथी नहीं रहता, अपितु वस्तुस्थिति के विराट स्वरूप में सम्भावनाओं का दर्शन करता है, यही स्यादवाद है जिससे व्यक्ति में न कट्टरता रहती है न अपनी बात को मनाने की जिद्द एक निश्छल उदार एवं सर्वव्यापक दृष्टि के कारण व्यक्ति का मन, विचार एवं आचरण सभी निष्कपट हो जाते हैं। अनेकान्तवाद बढ़ते हुये हिंसा के ताण्डव पर रोक लगाने का आधार प्रस्तुत करता है, सच तो यह है कि हिंसा के बीज कट्टरता, कठोर सिद्धान्तवादिता एवं स्वयं के ज्ञान के दम्भ एवं संकीर्ण दृष्टिकोण के कारण पनपते हैं।

धर्मान्धता, व्यक्तिगत महात्वाकांक्षा स्वयं को ज्ञानी समझने की भूल ही अन्तत: संघर्ष एवं युद्ध तथा हिंसा का कारण है, अनेकान्त जीवनचर्या है जीवनशैली है। हिंसक तरीकों, सैद्धान्तिक विरोधों तथा कट्टर धर्मान्धता को समझने एवं संतुलित करने का वैज्ञानिक आधार है।

अनेकान्त विश्वास और सम्भावनाओं का दर्शन है-जीवन जीने की व्यापक एवं सहिष्णु पद्धति है जो कट्टर सिद्धान्तों से मुक्त कर व्यक्ति को संतुलित एवं सम्यक जीवन जीने की कला सिखाती है।

अहिंसा अपरिग्रह पर आधारित है, परिग्रह को हिंसा का आधार माना गया है। परिग्रह यानी संचय करने की वृत्ति-परिग्रह यानी अपने पराये की भावना-परिग्रह यानी माया मोह, ममता की भावना, जो शेष पृष्ठ १६ पर ...

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

Himmat Bardia
Mob: 9830135666
HIMMAT ELECTRIC CO.
16, Ganesh Chandra Avenue, Kolkata - 700 013
HIMMAT ELECTRICALS & ELECTRONICS
54, Ezra Street, Kolkata - 700 001
Crompton Greaves | Bharat Bijlee | Schneider Electric | SIEMENS | Kirloskar | HARIA GLANDS.

जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

Kewal Chand Suresh Kr. Patni
Mob: 93310 07093
RISHAV TEXTILES (P) LTD.
158, Jamunalal Bajaj Street, 3rd Floor,
Kolkata, West Bengal, Bharat - 700 007
190-A, Manicktalla Main Road, 2nd Floor,
Kolkata, West Bengal, Bharat - 700 054
Ph: 93314 73245

श्रीमान फूलचन्दजी सा. गोखरू

श्रीमती चन्द्रकुमारी जी गोखरू

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

डॉ. राजेन्द्र गोखरू
अध्यक्षः जैन सोशल ग्रुप भीलवाड़ा
अध्यक्षः भारतीय जैन संघटना, भीलवाड़ा
राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्यः जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
कन्वीनरः जीतो राजस्थान जोन (मेम्बरशीप ड्राइव)
अध्यक्षः बनेड़ा जन सेवा संस्थान, भीलवाड़ा

नारी शिरोमणी डॉ. पुष्पा गोखरू
राष्ट्रीय अध्यक्षः जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा, नई दिल्ली
राजस्थान अध्यक्षः भारतीय जैन संघटना महिला शाखा
एडवाइज़रः जीतो राजस्थान जोन
संरक्षकः भारतीय जैन संघटना, भीलवाड़ा

राजेन्द्र कुमार ऋषि कुमार गोखरू

गोखरू ट्रान्सपोर्ट कम्पनी | गोखरू एन्टरप्राइजेज | ऋषभ सिटी मार्ट प्रा.लि. | ऋषि एन्टरप्राइजेज
गोखरू बल्क केरियर्स | ऋषि एसोसियेटस | डायनामिक रिट्रेडिंग कारपोरेशन | जय एन्टरप्राइजेज

36, मेन सेक्टर, शास्त्री नगर, भीलवाड़ा, राजस्थान, भारत- 311001 फोनः 1482- 251968, मो. 9414184001

पावन दिन है आ गया,
महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो,
फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर

हार्दिक शुभकामनाएं

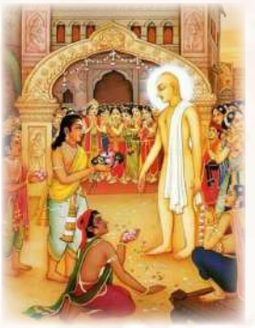

डॉ. राजकुमार हिराचंद शाह
डॉ. निकीता राजकुमार शाह
डॉ. रितेश, डॉ. रीमा शाह
श्रीमती शिप्रा, सौमिल आर. शाह

158, चिराग, शेर-ए पंजाब सोसायटी, महाकाली केव्हज रोड,
अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत- 400 093
दूरध्वनि - 022-022-35930361
क्लिनिक : 022-7400166631/32

भारत को 'भारत' ही बोला जाए   Remove 'INDIA' Name From The Constitution

---

जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

दानमल जैन
भ्रमणध्वनिः ९४१४८४९८३७

जेतपुर
साड़ी हाऊस

विक्रम : ९४१४१२७०५१,
नरेन्द्र : ९४१३६६१३५१
दूरध्वनि : ९४१३४६७०५१

श्रद्धा साड़ीज

रमेश ९४१४१३५१४५, प्रकाश : ९४१४४४०८५४ दूरध्वनि : ९५३०१२००५१
पेटी का नोहरा, मोती चौक, जोधपुर, राजस्थान, भारत-३४२००१

जोधाणा साड़ीज

अयुष ७७९२०९००००
जे. के. नर्सिंग होम की गली, प्रथम सी रोड सरदारपुरा,
जोधपुर, राजस्थान, भारत- ३४२००१

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १४ से ... व्यक्ति को सांसारिक बंधनों में बांधती है। जीवन में परिग्रह समाज में विग्रह को जन्म देते हैं, इसीलिए जैन साधु अपरिग्रह की चरम स्थिति को प्राप्त करते हैं, सब कुछ त्यागकर वे अपनी देह को भी स्वयं का नहीं मानते तथा तपस्या के द्वारा इसे तापते हैं। अपरिग्रह अहिंसा का एक सशक्त आधार है इसलिए जैन दर्शन भोगवादी न होकर निवृत्ति प्रदान है।

महावीर की अहिंसा का सिद्धान्त भावनात्मक न होकर तार्किक, वैचारिक आधार पर टिका है वैयक्तिक स्वतंत्रता की सामाजिकता के व्यापक सन्दर्भों में विवेचना हुई है। परिणामस्वरूप जैन दर्शन में सहिष्णुता, सहनशीलता, समानता, समरसता, सद्भाव के सम्यक दायित्व में ही अहिंसा का निरूपण हुआ है, अत: पर्यावरण के प्रति भी मुक्त दृष्टि है, जीव रक्षा में वृक्षों की सुरक्षा भी समाहित है। जैन सिद्धान्तों में क्षमा एवं दया को सबसे अधिक महत्व दिया गया है, एक सामान्य गृहस्थ से सभी जीवों के प्रति दया की अपेक्षा की गई है चाहे जीव एकेन्द्रिय हो या पंचन्द्रिय, सभी के साथ मनुष्य का व्यवहार दया और अहिंसा का होना चाहिये।

तीर्थंकर महावीर का अमरवाक्य 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' हमारे जीवन में सहयोगी व्यवस्था के महत्व पर आधारित है, यह सही है कि प्रतिकूल परिस्थितियों में व्यक्ति का स्वाभाविक व्यवहार परिवर्तित होता है कभी उसे सहयोग के लिये विष के घूंट निगलना होता है तो कभी उसमें असाधारण साहस का प्रस्फुटन होता है. दरअसल पारिवारिक असामंजस्य, क्रोध एवं वाणी के असंयम से होता है।

अहंकार एवं ममकार के अल्पीकरण से ही व्यक्ति शान्ति एवं आनन्द की अनुभूति करता है इसके लिये एकत्व की अनुप्रेक्षा आवश्यक है, जब व्यक्ति के भीतर आध्यात्मिक चेतना जाग जाती है तो वह परिस्थितियों से दुखी नहीं होता अपितु निरंतर प्रयोग व अभ्यास के द्वारा व्यक्ति स्वयं के भीतर रहना सीख जाता है और तभी अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थितियों में भी समभाव की चेतना जाग्रत रह सकती है।

दरअसल अब तक व्यक्ति व समाज को परस्पर विरोधी माना गया है, सम्पूर्ण पश्चिमी दर्शन में व्यक्ति व समाज के सम्बन्धों के आधार पर ही विचारधारायें निकली हैं, किसी में व्यक्ति को महत्व दिया गया है किसी में समाज को-यानी व्यक्ति व समाज को परस्पर एक दूसरे का प्रतिद्वन्दी माना गया है। आधुनिक भौतिक व्यक्तिवाद जो स्वच्छन्दतावाद बनता जा रहा है, वह मूलत: इसी विरोधाभासी विचार की उपज है, जबकि समाज व व्यक्ति दोनों का समन्वय होना चाहिये, कल्पना, योजना तथा क्रियान्विति शक्ति ही दक्षता की शक्तियाँ है। महावीर के दर्शन में अहिंसा का व्यापक रूप प्रतिबिम्बित हुआ है, जिसे अनेकान्त व अपरिग्रह द्वारा व्यापक क्षितिज दिया गया है, यही मन वचन कर्म की अहिंसा है तो व्यक्ति व देश और विश्व को छल, हिंसा, अविश्वास तथा तनाव से मुक्त कर सकती है।

दरअसल संसार प्रकाश से भरा हुआ है, चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश है, किन्तु हम बन्द कमरे में बैठे हैं, अंधेरे को अपना मानकर उसे सब कुछ मान बैठे हैं, यह हमारी कूपमंडूकता ही है, अन्धेरे से बाहर आयें तथा आनन्द का अनुभव करें, वक्त किसी का इन्तजार नहीं करता, अब वक्त आ गया है आज यदि नहीं जागेंगे तो बहुत देरी हो जायेगी, अत: अज्ञान को छोड़ कर ज्ञान प्राप्ति का मंत्र लेने का जुगत व प्रयास दोनों करे, हम अपने ज्ञान को जाग्रत करें, चेतना को जगायें, मूर्छा तोड़ें तथा अज्ञान को भगायें, यदि हम एक मिनट का संकल्प कर अपने क्रोध, राग-विराग, ममत्व पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करेंगे तो हम निश्चित रूप से अहिंसा की ओर महाप्रयाण कर सकेंगे, ज्ञान तो प्रकाश है हमें सही दिशा व अहिंसक मार्ग की ओर दिशा दिखाने का एक साधन है, किन्तु अहिंसामयी मार्ग पर स्वयं को पहचान कर अहिंसकमय होना हमारा कार्य है। भावों को निर्मल कर जीवन को निर्मलता के आलोक में ले जाकर ही हम स्वयं की पहचान कर सकते हैं।

एक साथ रहने वाले अनेक विरोधी धर्मों की संगति का नाम अनेकान्त है, अनेक मणको को एक धागे में पिरो देने से माला बन जाती है, मणको की विविधता माला को सौन्दर्य प्रदान करती है। जीवन की विविधताओं में एकता में सहिष्णुता है, विचारों में समन्वय व सापेक्षता का सूत्र वस्तुत: व्यक्ति की आस्था का सूत्र है 'अप्पणा सच्च मे से ज्जा'। सत्य की खोज में समर्पित वही व्यक्ति अपनी मंजिल तक पहुँच पाता है, जिसके पास अनेकान्त का आलोक होता है, अनेकान्त ऐसा तत्व है जो विवादास्पद प्रसंग में सामन्जस्य स्थापित करने वाली मनोवृत्ति को पनपने का अवसर देता है। अनेकान्त वस्तुत: एक साथ रहने वाले विरोधी धर्मों की संगति का नाम है, अनेकान्त का प्रयोक्ता अनाग्रही तथा विनम्र होता है इसलिये एकांगी, आग्रह व अहंकार से होने वाली कटुता से वह बच जाता है।

अनेकान्तमयी वस्तु का कथन करने की पद्धति स्याद्वाद है, किसी भी एक शब्द या वाक्य के द्वारा सारी की सारी वस्तु का युगपात कथन करना संभव नहीं होता, अत: कभी एक धर्म को मुख्य करके कथन करते हैं तो कभी दूसरे को। मुख्य धर्म के साथ ही अन्य धर्म भी गौण रूप से स्वीकार होते रहें, उनका निषेध न होने पावे, इस उद्देश्य से अनेकान्तवादी प्रत्येक वाक्य के साथ स्यात् अथवा कदाचित शब्द का प्रयोग करते है, कुछ 'भी' का भी प्रयोग करते हैं।

यद्यपि प्रत्येक वस्तु अनेक परस्पर विरोधी धर्मयुगलों का पिंड है, तथापि वस्तु में सम्भाव्यमान परस्पर विरोधी धर्म ही पाये जाते हैं असम्भाव्य नहीं। अन्यथा आत्मा में नित्यत्व-अनित्यत्व के समान चेतन-अचेतन धर्मों की संभावना का प्रसंग आयेगा, अत: अनेकान्त व स्यादवाद का प्रयोग करते समय यह सावधानी रखी जानी चाहिये कि हम जिन परस्पर विरोधी धर्मों की सत्ता वस्तु में प्रतिपादित करते हैं, उनकी सत्ता वस्तु में संभावित भी है या नहीं, जैसे जीव चेतन है हम उसे कदाचित अचेतन नहीं कह सकते, इस तरह स्यात् संशय या स्यादवाद नहीं है, इसीलिये सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक विद्वान तथा राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा है-

''इसमें कोई सन्देह नहीं कि अनेकान्त का अनुसन्धान 'भारत' की अहिंसा साधना का चरम उत्कर्ष है और सारा संसार इसे जितना शीघ्र अपनायेगा, विश्व में शान्ति भी शीघ्र स्थापित होगी।''

- डॉ. सुशीला पाटनी जैन
मदनगंज-किशनगढ, राजस्थान,
भारत

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

महावीर की दृष्टि में संयम ही स्वास्थ्य की कुंजी है

महावीर का दर्शन मौलिक रुप से स्वास्थ्य और चिकित्सा का दर्शन नहीं वह तो आत्मा से आत्मा का दर्शन है परन्तु जब तक आत्मा मोक्ष को प्राप्त नहीं हो जाता, तब तक आत्मा शरीर के बिना नहीं रह सकती। शरीर की उपेक्षा कर आत्मा-शुद्धि हेतु साधना भी नहीं की जा सकती। शरीर के निर्वाह हेतु केवल ज्ञान के आलोक में जिस सम्यक जीवन शैली का उन्होंने कथन दिया, वह स्वत: मानव जाति के स्वास्थ्य का मौलिक शास्त्र बन गया।

आत्मा-शुद्धि और चेतना का विकास-

महावीर की दृष्टि में शुद्धात्मा-अनन्त दर्शन, अनन्त शक्ति और अनन्त आनन्द का स्त्रोत होती है तथा उस अवस्था में स्वास्थ्य की कोई समस्या नहीं होती, जितनी-जिसकी मलिनता, उतना उसके स्वास्थ्य की समस्या, परन्तु जब वह कर्मों के आवरणों से आच्छादित हो, मलीन अथवा अपवित्र बन जाती है तो कर्मों के आवरण के प्रभाव से उसकी सारी शक्तियाँ सीमित हो जाती हैं।

प्राण ऊर्जा और उर्जा स्त्रोत-

महावीर के अनुसार, जब मानव का जीव गर्भ में आता है तो अपने कर्मों के अनुसार आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्रवासोच्छवास, भाषा और मन रुपी छ: मूल ऊर्जा के स्त्रोत अर्थात् पर्याप्तियाँ प्राप्त होते हैं। प्रत्येक पर्याप्ति चुम्बक की भांति अपने-अपने गुणों के अनुसार पुद्गलों को आकर्षित कर, मानव शरीर का विकास करती हैं, जिन्हें ये शक्तियाँ पूर्ण रुप से प्राप्त होती हैं, उनका सम्पूर्ण एवम् सन्तुलित विकास होता है तथा जिन्हें ये पर्याप्तियाँ आंशिक रुप में प्राप्त होती हैं, उनका आंशिक ही होता है।

मानव को प्राप्त १० प्राण (तत्व)

महावीर ने चेतना के विकास में इन्द्रियों के स्वतन्त्र अस्तित्व का कथन दिया जबकि अन्य दर्शनों एवम् चिकित्सा वैज्ञानिकों ने उनके शरीर के एक अवयव तक ही कल्पना की, उनका सम्बन्ध पंच तत्वों में से किसी तत्व अथवा अंग तक ही सीमित कर दिया, ये जीवन शक्तियाँ कार्य के अनुसार मुख्य रुप से दस भागों में रुपान्तरित हो मानव की समस्त गतिविधियों का संचालन करती हैं, जिन्हें प्राण भी कहते हैं, प्राण जीवन को शक्ति प्रदान करते हैं, प्रत्येक प्राण अपने लिये आवश्यक पुद्गलों को आसपास के वातावरण से ग्रहण कर अपना-अपना कार्य कर सकते हैं।

श्रोत्रेन्द्रिय बल प्राण-

जिससे सुनने योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

चक्षुइन्द्रिय बल प्राण- जिससे देखने योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

घाणेन्द्रिय बल प्राण-

जिससे गन्ध लेने योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

रसनेन्द्रिय बल प्राण-

जिससे स्वाद योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

स्पर्शेन्द्रिय बल प्राण-

जिससे स्पर्श योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

श्वासोच्छ्वास बल प्राण-

जिससे श्वसन योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

मन बल प्राण-

जिससे भाषा वर्गणा योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

काया बल प्राण-

जिससे हलन-चलन योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

आयुष्य बल प्राण-

जिसके कारण जीव निश्चित अवधि तक किसी योनि में रह सकता है।

सारे प्राण आपसी सहयोग और समन्वय से कार्य करते **शेष पृष्ठ १८ पर...**

"World Class Bearings from The No.1 Distributors"
SCHAEFFLER
INA FAG
Authorised Industrial Distributors

PREMIER
Premier (India) Bearings Limited
193/282, Thambu Chetty Street, Chennai - 600 001
Phone : 044-45683000 to 45683029 | Email : chennai@pibl.co.in www.premierbearing.com

Regd. Office : Kolkata
Also Branches at :
Bharuch | Bhopal | Bhiwadi | Chandigarh | Coimbatore | Delhi | Gandhidham | Gurgaon | Gurugram-NCR
Guwahati | Jamshedpur | Kochi | Ludhiana | Mumbai | Mundra | Nashik | Raipur | Surat | Trichy

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

पृष्ठ १७ से... हैं परन्तु एक दूसरे का कार्य नहीं कर सकते। आँख सुन नहीं सकती, कान बोल नहीं सकता, नाक देख नहीं सकता इत्यादि। सबमें आयुष्य बल प्राण मुख्य होता है तथा उसके समाप्त होते ही अन्य प्राण प्रभावहीन हो जाते हैं, आयुष्य प्राण का प्रमुख सहयोगी श्वासोच्छवास बल प्राण होता है।

प्राण ऊर्जा का जितना सूक्ष्म एवम् तर्कसंगत विश्लेषण महावीर दर्शन में है उतना आधुनिक चिकित्सा पद्धति में भी नहीं किया गया, इसी कारण आँख, नाक, कान, आदि जड़ उपकरणों की खराबियों को दूर करने में तो आधुनिक चिकित्सा को आंशिक सफलता मिली, परन्तु जिनमें प्राण ऊर्जा का मौलिक प्रवाह ही नहीं हो, उनको सुधार पाने में उन्हें अभी तक सफलता नहीं मिली है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से इन पर्याप्तियों और प्राण का बहुत महत्व होता है, अत: प्राणों और पर्याप्तियों का संयम एवम् सदुपयोग सर्वाधिक आवश्यक है। पर्याप्तियों और प्राण के संयम का मतलब, हम उनका अनावश्यक दुरुपयोग अथवा अपव्यय न करें, अपितु अनादिकाल से आत्मा के साथ लगे कर्मों से छुटकारा पाने हेतु सदुपयोग एवम् सम्यक् पुरुषार्थ करें।

आहार संयम- जीवन चलाने के लिये जितना आवश्यक हो, निर्दोष, शुद्ध सात्विक भक्ष्य-अभक्ष्य आदि का विवेक रखकर, आहार-पानी आदि ग्रहण करना एवम् भोजन को प्रसाद की भांति प्रसन्नता पूर्वक शान्त चित्त से करना चाहिए।

शरीर का संयम- शरीर की अनावश्यक प्रवृत्तियों से बचना, बिना कारण न तो चलना-फिरना, उठना-बैठना, सोना और न प्रमाद करना, परन्तु आत्म-विकारों को दूर कर, कर्मों से मुक्त होने हेतु सम्यक् पुरुषार्थ करना।

इन्द्रियों का संयम- आँख है तो दिखेगा, देखे बिना नहीं रहा जा सकता। दिखना अलग है, देखना अलग है, देखते रहना अलग है, दिखने वाले की प्रतिक्रिया करना, स्मृति रखना, कामना करना अथवा आशक्ति रखना अलग-अलग देखने के स्तर होते हैं, अत: क्या देखना और क्या दिखना और क्या नहीं देखने का विवेक ही आँख का संयम होता है।

स्वाध्याय, सेवा, सन्त-दर्शन आँखों का सदुपयोग है तो काम-विकार बढ़ाने वाले साहित्य को पढ़ना एवम् दृश्यों को देखना आँखों का दुरुपयोग होता है, इसी प्रकार कान है तो सुनाई देगा परन्तु सुनाई देना अलग है, सुनना अलग है, सुनते रहना अलग है तथा सुने हुए की स्मृति, कामना रखना अलग होता है। राग-द्वेष और काम-विकार बढ़ाने वाली विकथाएँ आदि सुनना कानों का दुरुपयोग होता है, अत: कानों से क्या सुनना और क्या नहीं सुनने का सम्यक् विवेक आवश्यक होता है, इसी प्रकार नाक, जीभ एवम् शरीर का सदुपयोग करना चाहिए, इन्द्रियों की क्षमता से अधिक तथा अनावश्यक कार्य न लेना, वीर्य का नियन्त्रण रखना अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन करना, इन्द्रिय विषयों को उत्तेजित करने वाली प्रवृत्तियों एवम् वातावरण से यथा सम्भव दूर रहना, इन्द्रियों का संयम होता है।

श्वास का संयम:- मन्द गति से पूर्ण श्वास लेना तथा पूरक और रेचक के साथ-साथ कुम्भक कर, श्वास को अधिकाधिक विश्राम देना, जितना अधिक श्वास का संयम होता है, उतना व्यक्ति तनाव के कारणों से सहज बच जाता है, इससे शरीर और मन को बहुत आराम मिलता है, आवेग नहीं आता, आवेग से शरीर में असन्तुलन और रोग होने की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं।

भाषा का संयम:- अनावश्यक बोलने से जीवन शक्ति क्षीण होती है। आवश्यकता पड़ने पर सभ्य भाषा में सीमित एवम् मधुर बोलना अथवा मौन रहना आदि वाणी का संयम होता है। निन्दा करना, चुगली करना, गाली या अपशब्द बोलना, स्वप्रशंसा, क्लेशकारी भाषा बोलना, झूठे कलंक, आरोप लगाना, बिना कारण पंचायत करना, गप्पे मारना, व्यंग करना आदि वाणी का दुरुपयोग होता है। सोच-समझकर या तोल-तोल कर क्या, कहाँ और कैसे बोलना तथा क्यों और कहाँ चुप रहने का विवेक, भाषा का संयम होता है। मौन रहना भाषा का उत्कृष्ट संयम होता है। वाणी के प्रकम्पन हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। ध्वनि और मन्त्र चिकित्सा का यही आधार होता हैं, वाणी शरीर और मन दोनों को प्रभावित करती है।

मन का संयम:- मन से अनावश्यक मनन, चिन्तन, स्मृति और कल्पनाएँ न करना अर्थात् मन की सम्यक प्रवृति करना, मनोबल कमजोर करने वाले दृश्यों को न तो देखना और न सुनना, मन का संयम होता है। हिंसा, क्रूरता, घृणा, कामुकता, भय इत्यादि मनोबल कमजोर करने वाली प्रवृत्तियाँ मन का असंयम होता है।

उपरोक्त सभी पर्याप्तियाँ का सम्यक उपयोग अर्थात संयम स्वास्थ्य की कुंजी होता है, सभी रोगों का कारण पर्याप्तियों के असंयम से होने वाले प्राणों का असन्तुलन ही होता है। पर्याप्तियों के संयम से शरीर में रोग उत्पन्न होने की सम्भावनाएँ काफी कम हो जाती हैं और यदि रोग की स्थिति हो भी जाती है तो आहार एवम् अन्य पर्याप्तियों के संयम से पुन: शीघ्र स्वास्थय को प्राप्त किया जा सकता है, यही महावीर का संदेश 'शरीर स्वास्थ्य' का मूलाधार है।

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

Sampat mal jain
Mob: 9312875 216
Saneel jain
Mob: 9350040851
M.S. Wire & Cable
Saplist coxial wire in last Since 34 years
Manufacturer & supplier of :-
All kinds Of PVC Wires & Cables,
All kinds Of Electricals & Electronics Goods
41-B, Gali No.3, 3rd Floor,
Friends Colony Ind. Area, Delhi, Bharat -110095
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

अहिंसा परमो धर्मः

**'मधुरिमा कंठ में न होती तो शब्द विषपान बन गया होता।
आस्था दिल में न होती तो हृदय पाषाण बन गया होता।
प्रभु वीर से लेकर अब तक अगर ऐसा जैन धर्म न मिलता
तो यह संसार वीरान बन गया होता।'**

तीर्थंकर महावीर अहिंसा और अपरिग्रह की साक्षात् मूर्ति थे, सभी के साथ समान भाव रखते थे और किसी को भी कोई दुःख नहीं देना चाहते थे। पंचशील सिद्धान्त के प्रवर्तक एवं जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी मूर्तिमान प्रतीक थे, जिस युग में हिंसा, पशुबलि, जात-पात के भेदभाव का बोलबाला था. उसी युग में महावीर ने जन्म लिया।

तीर्थंकर महावीर ने अपने प्रवचनों में धर्म, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, क्षमा पर सबसे अधिक जोर दिया। त्याग और संयम, प्रेम और करुणा, शील और सदाचार ही उनके प्रवचनों का सार था, तीर्थंकर महावीर ने चर्तुविध संघ की स्थापना की, देश के भिन्न भिन्न भागों में घूमकर महावीर ने अपना पवित्र संदेश फैलाया, उन्होंने दुनिया को पंचशील के सिद्धान्त बताए, इसके अनुसार ये सिद्धान्त सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय, अहिंसा और क्षमा है, उन्होंने दुनिया को सत्य एवं अहिंसा जैसे खास उपदेशों के माध्यम से सही राह दिखाने की कोशिश की, अपने प्रवचनों से मनुष्य का सही मार्गदर्शन किया।

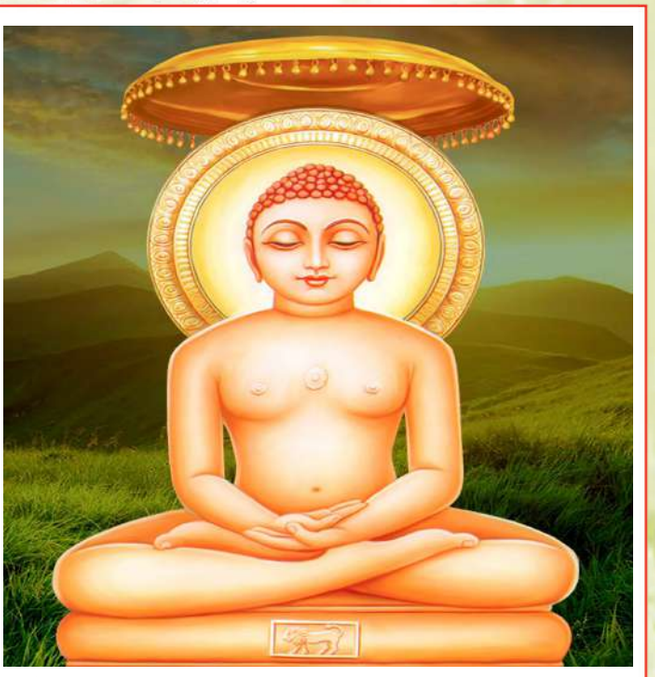

तीर्थंकर महावीर स्वामी ने हमें अहिंसा का मार्ग बताते हुए, सत्य के पक्ष में रहते हुए, किसी के हक को मारे बिना, किसी को सताए बिना, अपनी मर्यादा में रहते हुए पवित्र मन से, लोभ-लालच किए बिना, नियम में बंधकर सुख दुःख में संयमभाव में रहते हुए **शेष पृष्ठ २० पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर
हार्दिक शुभकामनाएं

NARENDRA PLASTIC

Narendra Plastic Pvt. Ltd.

Manufacturer of Compostable Bags
(Carrier Bags, Garbage Bags and Kirana Bags)
Certified by Central Pollution Control Board
ISO/ISO 17088 Compliant

3, Vakil Industrial Estate, Walbhat Road, Goregaon East,
Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400063
Tel.: +91 22-42525252 | Email : infor@narendrabags.com
Web.: wwww.narendrabags.com

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

DIGAMBER
FABRICS

Sanjay Jain ■ Saurabh Jain
9829013109 ■ 9929011109

PHOOL BOOTI PVT. LTD.

● Kurtis ● Salwar Suits ●
● Fabrics Work ●
● Printed Running Fabrics ●

● Address ●
C-43/44, Industrial Estate,
Near SBI Bank, Bias Godown,
South Jaipur, Rajasthan, Bharat -302006
Website: phoolbooti.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १९ से... आकुल-व्याकुल हुए बिना, धर्म संगत कार्य करते हुए मोक्ष पद पाने की ओर कदम बढ़ाते हुए, दुर्लभ जीवन को सार्थक बनाने का संदेश दिया, उन्होंने जो बोला सहज रूप से बोला, सरल एवं सुबोध शैली में बोला, सापेक्ष दृष्टि से स्पष्टीकरण करते हुए बोला। आपकी वाणी ने लोक हृदय को अपूर्व दिव्यता प्रदान की, आपका समवसरण जहां भी गया, वह कल्याण धाम हो गया।

तीर्थंकर महावीर कहते हैं कि धर्म सबसे उत्तम मंगल है। अहिंसा, संयम और तप ही धर्म है, जिसके मन में सदा धर्म रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। धर्म से वृत्तियों का उन्नयन होता है, धर्म भावना से चेतना का शुद्धिकरण होता है। धर्म व्यक्ति के आचरण को पवित्र एवं शुद्ध बनाता है, धर्म से सृष्टि के प्रति करुणा एवं अपनत्व की भावना उत्पन्न होती है, इसीलिए महावीर जी ने कहा, 'एगा धम्म पडिमा, जं से आयो पवज्जवजाए' अर्थात् धर्म ऐसा पवित्र अनुष्ठान है, जिससे आत्मा का शुद्धिकरण होता है। महावीर ने प्राणीमात्र की हितैषिता एवं उनके कल्याण की दृष्टि से धर्म की व्याख्या की, धर्म के सिवाय संसार में कोई भी मनुष्य का रक्षक नहीं है।

महावीर स्वामी ने संसार रुपी दावानल के तप को शांत करने के लिए अहिंसा के उपदेश दिए, उनके उपदेशों को जानने और समझने के लिए कोई विशेष प्रयास की ज़रुरत नहीं, धर्म भावना से चेतना का शुद्धिकरण होता है। धर्म से वृत्तियों का उन्नयन होता है, धर्म व्यक्ति के आचरण को पवित्र एवं शुद्ध बनाता है, धर्म से सृष्टि के प्रति करुणा एवं अपनत्व की भावना उत्पन्न होती है।

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES
NEW PRODUCT

FEATURES :
- Automatic start, stop and clear.
- With Batch, Add and Self-checking functions.
- UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
- Automatic half-note, chained note detecting.
- Double-note detecting with IR.
- LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :
- Counting Display : 4 digits
- Batch Display : 3 digits
- Counting speed : 1000pcs/min
- Hopper Capacity : 300 notes
- Stacker Capacity : 200 notes
- Size of countable note : 50*110-90*190mm
- Power Supply : AC220V±10% 50Hz
- Power Consumption : ≤ 80W
- Size of box : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO®
An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada,Navimumbai-400705, INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

तीर्थंकर महावीर ने मानव भव दुर्लभता का वर्णन करते हुए गणधर गौतम से कहा था कि हे गौतम! सब प्राणियों के लिए चिरकाल में मनुष्य जन्म दुर्लभ है, क्योंकि कर्मों का आवरण उतीव गहन है, अंततः इस भव को पाकर एक क्षण के लिए भी प्रमाद तथा आलस नहीं करना चाहिए, अनेक गतियों और योनियों में भटकते-भटकते जब जीव शुद्धि को प्राप्त करता है तब कहीं जाकर मनुष्य योनि प्राप्त होती है। महावीर जी का कहना था कि किसी आत्मा की सबसे बड़ी गलती अपने असली रूप को नहीं पहचानना है तथा यह केवल आत्मज्ञान प्राप्त करके ही ठीक किया जा सकता है।

मनुष्य को अपने जीवन में जो धारण करना चाहिए वही धर्म है। धारण करने योग्य हिंसा, क्रूरता,कठोरता, अपवित्रता, अहंकार, क्रोध, असत्य, असंयम, व्यभिचार, परिग्रह आदि विकार हैं, यदि संसार का प्रत्येक व्यक्ति हिंसक हो जाए तो समाज का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा तथा सर्वत्र भय, अशांति एवं पाशविकता का साम्राज्य स्थापित हो जाएगा। संपूर्ण विश्व में एकमात्र जैन धर्म ही इस बात में आस्था रखता है कि प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है अर्थात् महावीर स्वामी की तरह ही प्रत्येक व्यक्ति जैन धर्म का ज्ञान प्राप्त करके उसमें सच्ची आस्था रखकर, उसके अनुसार आचरण करके, बड़े पुण्योदय से उसे प्राप्त कर, दुर्लभ मानव योनी का एकमात्र सच्चा व अंतिम सुख, संपूर्ण जीवन जन्म - मरण के बंधन से मुक्त होने वाले कर्म करते हुए मोक्ष महाफल पाने हेतु, कदम बढ़ाना तथा उसे प्राप्त कर वीर महावीर बन दुर्लभ जीवन को सार्थक किया जा सकता है।

महावीर जी ने कोई ग्रंथ नहीं लिखा, उन्होंने जो उपदेश दिए. गणधरों ने उनका संकलन किया, वे संकलन ही शास्त्र बन गए, इनमें काल, लोक, जीव आदि के भेद-प्रभेदों का इतना विशुद्ध एवं सूक्ष्म विवेचन है कि यह एक विश्व कोष का विषय नहीं, अपितु ज्ञान विज्ञान की शाखाओं प्रशाखाओं के अलग अलग विश्व कोषों का समाहार है।

'चलते-चलते राह है बढ़ते-बढ़ते ज्ञान
तपते-तपते सूर्य है महावीर महान'

अर्थात् जिनका आचरण ही दूसरों के लिये राह/मार्ग संदेश बना, उस प्रायोगिक अनुभव से जिन्होंने आत्मज्ञान से विश्वविज्ञान को प्राप्त किया, ऐसे जीवात्मा रूपी कमल को विकसित करने वाले ज्ञान सूर्य है महावीर, इन सिद्धांतों का लक्ष्य आध्यात्मिक शांति, एक बेहतर पुनर्जन्म, या मुक्ति प्राप्त करना है। चक्रवर्ती के अनुसार ये शिक्षाएँ व्यक्ति के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में मदद करती हैं। महावीर की शिक्षाओं को उनके प्रमुख शिष्य, इंद्रभूति गौतम ने 'जिनागम' के रूप में संकलित किया था।

पूरे विश्व में अहिंसा और सत्य का सन्देश देने वाले तीर्थंकर महावीर को हमारा शत शत नमन। महावीर स्वामी की जय हो!

- कोमल कुमार जैन
चेयरमैन - ड्यूक फैशंस (इंडिया) लिमिटेड, लुधियाना
एफ.सी.पी., जीतो

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर

हार्दिक शुभकामनाएं

परस्परोपग्रहो जीवानाम

Dugar Brothers & Company

1116 Dalamal Towers, 211 Nariman Point, Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400021

भारत को 'भारत' ही बोला जाए   एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

ASHOK JAIN
Mob: 9821159793

VIJAY
HARDWARE MART PVT. LTD.

Exclusive Showroom for Furniture & Glass Architectural Fittings

Regd. Office:
Shop No. 7, Himalaya Apartment, 6th Golibar Road,
Opp. R. K. Hospital, Santacruz East,
Mumbai, Maharashtra Bharat - 400055
Web: www.vhmpl.com Email : info@vhmpl.com / help@vhmpl.com
Contacts : +91 99201 70147 / +91 8828 68 98 10

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर

हार्दिक शुभकामनाएं

Bimal Bhansali
Mob: 9312243811

Nikhil Bhansali
Mob: 9990713090

Bhansali Polytech

(A Unit of Injection Moulding)

F-119, Sector-2, Dsiidc, Bawana, Delhi, Bharat-110039
E-mail: bhansalipolytech@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए   एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

श्री शांतिनाथ जैन मंदिर, लहरा रोई, (ज़ीरा) पंजाब में प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन

भारत की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत में जैन धर्म का विशेष स्थान है, इसकी परंपराओं में मंदिरों की प्रतिष्ठा एवं धार्मिक अनुष्ठानों का अत्यंत महत्व होता है, इसी कड़ी में हाल ही में पंजाब के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल लहरा रोई (ज़ीरा) में एक भव्य जैन मंदिर का निर्माण पूर्ण हुआ, जिसका उद्घाटन एवं प्रतिष्ठा महोत्सव अत्यंत श्रद्धा और भव्यता के साथ मनाया गया, इस पवित्र आयोजन में समाज के प्रतिष्ठित उद्योगपति, धार्मिक संतगण और जैन समाज के गणमान्य लोग शामिल हुए, इस अवसर पर ड्यूक फैशन के चेयरमैन एवं प्रमुख उद्योगपति कोमल कुमार जैन और उनके परिवार ने विशेष रूप से भाग लिया और पुण्य कार्य का लाभ लिया। श्री जैन, जो न केवल भारतीय उद्योग जगत का एक प्रतिष्ठित नाम हैं, बल्कि समाज सेवा और धार्मिक कार्यों में भी अग्रणी भूमिका निभाते हैं, उल्लेखनीय है की श्री कोमल कुमार जैन (ड्यूक) ने इस जिन मंदिर का पूर्ण निर्माण करवाया। ड्यूक! जो भारत में परिधान उद्योग का एक जाना-माना नाम है, समाज सेवा और धार्मिक आयोजनों में भी अपनी सक्रिय भूमिका निभाता आया है, इस प्रतिष्ठा महोत्सव में उनकी भागीदारी और सहयोग को देखते हुए उन्हें विशेष रूप से सम्मानित किया गया, कार्यक्रम में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान, प्रवचन एवं भक्ति गीतों का आयोजन किया गया, जिससे उपस्थित श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त हुई। जैन धर्म की परंपराओं के अनुसार प्रतिष्ठा महोत्सव में विशेष पूजा-अर्चना, शांतिधारा एवं प्रभु की मूर्ति स्थापना की गई, यह आयोजन न केवल एक धार्मिक समागम था, बल्कि समाज को आध्यात्मिक रूप से जागरूक करने का भी एक महत्वपूर्ण प्रयास था।

प्रतिष्ठा महोत्सव गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय धर्मधुरंधर सूरीश्वर जी महाराज, डॉ. इंद्रजीत विजय जी, श्री ऋषभचंद जी महाराज, श्री बोधी विजय जी महाराज, साध्वी कमलप्रभा श्री जी महाराज, तपचंद्रिका साध्वी कल्पज्ञा श्री जी महाराज, साध्वी सुमनीषा श्री महाराज आदि साधु-साध्वी वृंद की पावनकारी निश्रा एवं श्री आत्म वल्लभ जैन चैरिटेबल ट्रस्ट लहरा रोई के संयोजकत्व में संपन्न हुयी, यह लहरा रोई गुरु आत्माराम जी महाराज अर्थात् आचार्य श्रीमद् विजयानन्द सूरीश्वर जी महाराज का जन्म स्थल भी है और यहाँ उनका समाधि मंदिर एवं कीर्ति स्तंभ भी है। गुरु आत्म ने अपना संपूर्ण जीवन पुराने जिन मंदिरों के नवनिर्माण में लगा दिया, उनके खुद के जन्मस्थल 'लहरा रोई' पर कोई भी जिन मंदिर नहीं था। गुरु रत्नाकर ने यह भावना व्यक्त करते हुए हमें यह उद्बोधन दिया कि उनके जन्मस्थान पर जिन मंदिर जरूर होना चाहिए, जिसका उत्तरदायीत्व 'ड्यूक' परिवार ने लिया। मंदिर के निर्माण के दौरान ही एक घटना घटी, जिसमें इस जिन मंदिर में प्रतिष्ठित होने वाले मूल नायक परमात्मा श्री शांतिनाथ जी एवं अन्य तीन परमात्मा की प्रीतिमाएं इसी भूभाग से प्रकट हुई, जहाँ पर यह जिन मंदिर निर्माण हो रहा था, इस प्रकार यह जिन मंदिर एक ऐतिहासिक चमत्कारी, अतिशय के साथ एक धार्मिक स्थल ही नहीं, बल्कि संस्कार और आध्यात्मिक शांति का भी केंद्र बन चुका है, इसके दर्शन के लिए पूरे भारत से लोग आना चाहेंगे, जिन मंदिर बनाने का लाभ श्रीमती कमलावंती धर्मप्रकाश जैन, कोमल कुमार कंचन जैन, कुंतलराज कीर्ति जैन, निधि मनीष जैन, विधु दीपक जैन, रुचि सुनील जैन, कायना, क्यान जैन परिवार मैसर्स ड्यूक ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज ने लिया।

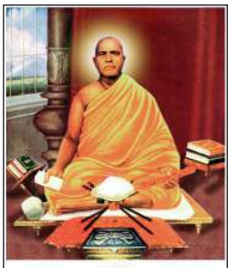

न्यायाम्भोनिधि आचार्य श्रीमद् विजयानन्द सूरीश्वर जी म. सा.

इस शुभ अवसर पर कोमल कुमार जैन के साथ प्रमुख उद्योगपति एवं समाजसेवी जवाहर लाल ओसवाल, हरिओम जैन, मनोज जैन, सुशील जैन, अशोक जैन, कैलाश चंद जैन, संजय जैन, महावीर जैन, नवीन जैन, अजय जैन, निर्मल जैन, अनिल जैन, सी.एच.ई. से विनोद जैन, सुरेश पाटनी, वीरजी, दिल्ली निवासी मनोज सिंगल, ललित नाहटा, आगरा निवासी अजीत जैन, अशोक जैन, धीरज जैन सहित अन्य प्रतिष्ठित हस्तियां भी उपस्थित थी।

कोमल जी ने कहा कि संस्कार और आध्यात्मिकता किसी भी व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, यही कारण है कि वे हमेशा धार्मिक स्थलों के निर्माण और उनके विकास में योगदान देते रहे हैं, उन्होंने जैन सभा द्वारा की जा रही सेवाओं की भी सराहना की और कहा कि 'धर्म और आध्यात्मिकता केवल पूजा-अर्चना तक सीमित नहीं, बल्कि यह समाज के नैतिक मूल्यों को सशक्त करने का माध्यम भी है। **शेष पृष्ठ २३ पर...**

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

पृष्ठ २२ से... प्रतिष्ठा महोत्सव हमें आत्मशुद्धि, संयम और परोपकार का संदेश देता है यह आयोजन हमारी आध्यात्मिक उन्नति और समाज में शांति, सौहार्द और सद्भावना को बढ़ावा देने का एक सशक्त प्रयास है। उत्साह पूर्ण समागम में जिले और आसपास के इलाकों के कई जैन परिवारों ने भाग लिया, विदेशों में बसे कई उद्योगपतियों ने भी अपने संदेश भेजकर 'लहरा तीर्थ' मंदिर की सराहना की, मंदिर के निर्माण में जिन महानुभावों का योगदान रहा, उन्हें समाज द्वारा विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

तीर्थ स्थल पर पहुंचने के लिए नजदीकी रेलवे स्टेशन लुधियाना १०० कि. मी., फिरोजपुर ३५ की.मी. अथवा गूगल मैप्स पर यह तीर्थ स्थल श्री आत्म वल्लभ जैन अतिथिभवन, लहरा रोई के नाम से पंजीकृत है, यहाँ धर्मशाला एवं भोजनशाला की भी व्यवस्था की गई है।

पुणे की बेटी साक्षी छाजेड़ ने लंदन में लहराया परचम! स्विमथॉन यूके २०२५ में बनीं सर्वश्रेष्ठ फिनिशर!

पुणे के जाने माने उद्योजक मनोज छाजेड़ की सुपुत्री साक्षी छाजेड़ ने एक बार फिर से देश का गौरव बढ़ाया है। नेशनल लेवल स्विमर 'साक्षी' ने नेशनल-लेवल पर अनगिनत पुरस्कार जीते हैं और अपने जिले में कई रिकॉर्ड स्थापित किए हैं, जो उनकी प्रतिभा को निखारते हैं। मात्र तीन साल की छोटी उम्र में कॉम्पिटिटिव स्विमिंग शुरु करने वाली साक्षी, एक स्ट्रांग स्विमर के रूप में उभरी हैं, जिन्होंने अपने परिवार और देश को गौरवान्वित किया है।

'साक्षी छाजेड़' ने २९ मार्च, २०२५ को आइकॉनिक लंदन एक्वेटिक्स सेंटर में हुए 'Swimathon UK २०२५' में पार्टिसिपेट किया, जो २.५km की स्विमिंग रेस थी, उन्होंने ४६ मिनट्स में रेस पूरी की, यानि १.९ मिनट्स पर १०० मीटर्स का स्पेस। सबसे बड़ी बात यह है कि 'साक्षी' उस आयोजन स्थल पर सर्वश्रेष्ठ फिनिशर के रूप में उभरीं!

स्विमथॉन वर्ल्ड का सबसे बड़ा फंडरेज़िंग पूल-बेस्ड स्विमिंग इवेंट है, जो १९८६ में लंदन में शुरु हुआ और १९८८ में यूके में एक नेशनल इवेंट बन गया, इसने ७००,००० से ज्यादा पार्टिसिपेंट्स को अट्रैक्ट किया है और विभिन्न दान संस्थाओं के लिए ५० मिलियन पाउंड से ज्यादा फंड्स इकट्ठा रेज़ किए हैं।

महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ
Kamal Pirodia
Mob: 98270-62957
Abhishek Pirodia
Mob: 94253-56070
Vipul Pirodia
Mob: 94248-43487
Vipul Timber Traders
Deals in: Timber Merchant, Plywood, Flush Door, Aluminium Section, Laminates, Veneers and all Decorative Items
190, Lakkadpitha, Ratlam, Madhya Pradesh- 457001
Email: vipultimber_rtm@yahoo.co.in

जीयो और जीने दो के
विचारक तीर्थंकर महावीर के
जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

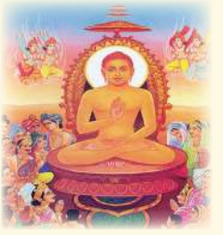

Raichand Choraria Jain
Mob. 09962584570
Mahendar Choraria Jain
Mob. 09841184570
Kamal Choraria Jain
Mob. 09841644570
Kiran Wire Netting Co.
96(Old No.58) Rasappa Chetty Street
Chennai, Tamilnadu, Bharat-600003
Ph.: 044 25353397/04425350986
E-mail: kwncom@gmail.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

शारदा मंदिर हाई स्कूल में भक्ति संध्या और अष्ट मंगल प्रतियोगिता

लोढा फाउंडेशन की ओर से तीर्थंकर महावीर के जन्मकल्याणक के उपलक्ष्य में शारदा मंदिर हाई स्कूल, गामदेवी, मुंबई में भक्ति संगीत संध्या एवं अष्ट मंगल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, इस दौरान लोढा फाउंडेशन की अध्यक्षा डॉ. मंजू मंगलप्रभात लोढा एवं हुलाशीबेन वाणीगोता की अगुवाई में भक्ति गीत, नृत्य, सांस्कृतिक प्रस्तुति एवं अष्ट मंगल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। संगीतकार आशीष जैन एवं नरेंद्र वाणीगोता ने भक्ति गीतों की गंगा बहाई, अष्ट मंगल प्रतियोगिता में विभिन्न महिला मंडलों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, इस अवसर पर पूज्य गुरु भगवंत श्री जिनरत्नविजय जी ने 'महावीर जन्मकल्याणक' के महात्म्य पर प्रकाश डाला। डॉ. मंजू लोढा ने विश्व नवकार दिवस (९ अप्रैल) को श्रद्धा एवं भक्ति के साथ मनाने का आह्वान किया, इस अवसर पर महाराष्ट्र के कैबिनेट मंत्री मंगलप्रभात लोढा भी उपस्थित थे।

डॉ. मंजू लोढा एवं हुलाशीबेन वाणीगोता १५ वर्ष से इस भक्ति संध्या का आयोजन करती आ रही हैं, इसके माध्यम से समाज एवं संस्कृति को सशक्त करने का महत्वपूर्ण संदेश लोगों तक पहुंचाया जा रहा है। कार्यक्रम में लगभग २८ मंडलों ने भाग लिया। ५०० से अधिक महिलाओं की उपस्थिति रही।

जीतो द्वारा विश्व नवकार महामंत्र दिवस का
१०८ देशों में आयोजन ऐतिहासिक पहल- जीतो अपेक्स अध्यक्ष विजय भंडारी

पुणे: विश्व शांति और कल्याण के लिए, ९ अप्रैल, २०२५ को एक ऐतिहासिक आयोजन हुआ। जीतो (जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गनाइजेशन) द्वारा आयोजित, विश्व नवकार महामंत्र दिवस के शुभ अवसर पर, १०८ देशों में एक साथ नवकार महामंत्र का जाप किया गया, इस ऐतिहासिक समारोह में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विशेष उपस्थिति रही।

जीतो अपेक्स अध्यक्ष विजय भंडारी ने इस अद्भुत आयोजन की जानकारी के अनुसार ९ अप्रैल की सुबह ७:०० बजे से ९:३० बजे के बीच, सारे विश्व में एक ही समय पर नवकार मंत्र का जाप किया गया। दिल्ली के विज्ञान भवन में भी एक विशेष समारोह आयोजित किया गया, इस अद्वितीय पहल में धार्मिक गुरु, राजनीतिक नेता, अभिनेता, खिलाडी, उद्योगपति और सामाजिक कार्यकर्ता सहित विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित व्यक्ति बढ़ चढ़कर हिस्सा लिए। धर्म, जाति, पंथ, राज्य और देश की सीमाओं को पार करते हुए १०८ देशों में नवकार महामंत्र का जाप हुआ, इस आयोजन के लिए १०० से अधिक अनुष्ठान आयोजित किए गए और ६,००० से अधिक स्थानों से इसका सीधा प्रसारण किया गया।

आज दुनिया में अशांति और संघर्ष का माहौल है, ऐसे समय में विश्व शांति और कल्याण के लिए नवकार महामंत्र का जाप अत्यंत महत्वपूर्ण है, यह मंत्र हमें शांति, सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए प्रवृत्त करता है।

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

Akhay Chand Baid
Mob: 09435021650
Nirmal Kumar baid
Mob: 09435021658
UDAYCHAND MULCHAND
North Bongaigaon, Acharya Shree Tulsi Marg,
BPongaigaon, Assam-783380
Ph.: 03664-230554, 224744

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ
Ashish Kamdar Jain
Ashish Kamdar & Co.
Office: 5, Hari Bhuvan, 1st Floor, Zaver Road,
Near Jain Derasar, Mulund West, Mumbai, Maharashra, Bharat - 400 080
Resi : 201/202, Zenith Tower, A Wing, P K Road, Keshav Pada,
Near Kalidas Natya Mandir, Mulund West,
Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400 080
भ्रमणध्वनि : 98676 77272
अणुडाक : ashishkamdar_ca@yahoo.com

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

B. K. JAIN
ACCUSPIRALS

AN ISO 9001:2000 Company

MFRS :
QUALITY GEARS
SPIRAL BEVEL, STRAIGHT BEVEL, WORM AND
WORM WHEELS, GEAR BOXES & PRECISION COMPONENTS

Works :
#D-424, 425, 10th main, 2nd Stage,
Peenya Industrial Estate, Bangalore, Karnataka, Bharat-560 058
दूरध्वनि : +91-80-28362280 / 28364749 / 51171539
Telefax: +91-80-28360814 / भ्रमणध्वनि : 09341232704
अणुडाक : contact@accuspirals.com
अंतरताना : www.accuspirals.com

Resi :
#320, 1st Block, 5th Cross,
R.T. Nagar, Bangalore
Karnataka, Bharat-560 032
दूरध्वनि : +91-80-23430115
Telefax: +91-80-23332964

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें
Vikas Banthia Gulab Banthia
Mob. 9849500685

MTV
MOHIT
Toys Villa

#15-8-312, Sri K.C. Nivas, Near Mansingh Hotel,
Feelkhana, Hyderabad, Telangana,
Bharat - 500012 | Mob: 9640161718

अहंकार महाअग्नि है, जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

MADANLAL M. SAKHALA JAIN
Mob: 9820057718
MAXHEAL PHARMACEUTICALS (INDIA) LTD.

H.O. :- Maxheal House, Plot No. 169, Bangur Nagar, Goregaon West, Mumbai - 400090, Maharashtra, India.
Plant I:- 95-6, M.I.D.C. Satpur, Nashik - 422007, Maharashtra, India.
Plant II:- Plot No 2-7 / 80-85, Sursez, Sachin-394230, Surat, Gujarat, India.
Plant III:- J-7, M.I.D.C., Tarapur Industrial Area, Boisar - Palghar 401506, Maharashtra, India.

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मल कुमार सेठी एक महापुरुष

नई दिल्ली: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री निर्मल कुमार जी सेठी जी की पुण्यतिथि २७ अप्रैल को सर्वत्र मनाई जाती है, एक महान उद्योगपति, महान समाज सेवी, धर्मग्रंथों के अभ्यासक, मुनिभक्त निर्मल कुमार जी एक सीधे साधे व्यक्ति, सहज जमीन पर भी बैठ जाते, सामान्य व्यक्ति से मिलकर हाल-चाल पूछते, जब भी औरंगाबाद, महाराष्ट्र आते तो चिकलथाणा एरोड्रम पर हम स्वागत के लिए जाते। पिछले ३०-३५ वर्षों से सेठी जी से मेरा संबंध रहा, महाराष्ट्र के जैन समाज की स्थिति के बारे में चर्चा करते, अत्यंत आत्मीयता से अनेक पहलू पर जानना चाहते, हमेशा उत्साही रहते यह उनकी विशेषता थी। एक बार हम णमोकार तीर्थ में एक समारोह में मिले, साथ ही बैठे थे तब उन्होंने समाज के आर्थिक हालात व महिलाओं की स्थिति को लेकर चर्चा की और उचित कदम उठाना होगा, विचार व्यक्त किया। निर्मल कुमार जी सेठी कितने सतर्क चिंतित थे, इसका एहसास हुआ, एक उद्योगपति महान समाज सेवक होते हुए समाज के प्रति सजग थे। २००७ में राष्ट्रीय पुरस्कार हेतु हम दिल्ली गए थे, निर्मल सेठी जी ने हमें आमंत्रित कर महासभा कार्यालय में सम्मान कर, चारित्र्य चक्रवर्ती ग्रंथ स्वरूप भेट दिया तथा शाम को अपने कार से भोजन के लिए निजी आवास पर ले गए। निर्मल कुमार जी सेठी जैसा व्यक्ति सौ साल में एक बार जन्म लेता है, यादें अनेक हैं, स्मृतियां हृदय पटल पर अंकित है, ऐसे महान व्यक्तित्व, महामानव को हार्दिक श्रद्धांजलि।

- एम.सी. जैन

४० लाख की लागत से बनकर तैयार होगा नया समता भवन

नगरी में समता भवन निर्माण कार्य का भूमि पूजन के मुख्य अतिथि अखिल भारतीय साधुमार्गीय जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेंद्र गांधी जावद, कार्यक्रम की विशेष अतिथि राष्ट्रीय महामंत्री सुरेश कुमार बछावत बीकानेर, मंदसौर विधायक विपिन जैन, मालवांचल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

अजीत चेलावत, मालवांचल राष्ट्रीय मंत्री कमल पिरोदिया, कार्य समिति सदस्य अभय चोपड़ा और सचिन खारीवाल, शिखर सदस्य विजय कुमार टंच एवं नगर पालिका अध्यक्ष संगीता घनश्याम बगड़, उपाध्यक्ष घनश्याम अटोलिया की उपस्थिति में भूमि पूजन डॉक्टर राजेंद्र कुमार रामचंद्र के द्वारा २४ मार्च सोमवार को नवकार महामंत्र के साथ भूमि पूजन अतिथियों द्वारा किया गया।

तत्पश्चात अतिथियों का स्वागत समाज अध्यक्ष मनीष जैन मंत्री राजकुमार जैन कोषाध्यक्ष मनोज जैन संयोजक सुनील कोठारी कोई उपाध्यक्ष सुनील जैन ने अतिथियों का साल श्रीफल से सम्मान किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गांधी ने कहा कि समाज में धार्मिक कार्यों में बढ़कर भाग लेना चाहिए और स्थानक बनने के बाद पर समय-समय पर धर्म आराधना होनी चाहिए तभी 'समता भवन' बना सार्थक होगा। रतलाम, जावरा, दलोदा, सीतामऊ, कचनारा, ढोढर, मंदसौर सहित आसपास क्षेत्र के समाजजन मौजूद थे।

- अभय चोपड़ा
रतलाम, मध्य प्रदेश, भारत

जय भिक्षु ।। ॐ अर्हम् ।। जय महाश्रमण

तीर्थंकर भगवान महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
सकल जैन समाज को हार्दिक शुभकामनायें

स्वर्गीय मातोश्री बदाम देवी व
स्वर्गीय पिताश्री मनोहर लाल जी सोनी के आशीर्वाद से...
-:: श्रद्धाप्रणत ::-
रमेश- ललिता- कार्तिक सोनी परिवार ठाणे (थामला)
कावेरी सन्नी जी मेहता

कावेरी ज्वेलर्स
7 साई धाम अपार्टमेंट, यशोधन नगर बस स्टाप के पास, ठाणे, महाराष्ट्र, भारत- 400606
भ्रमणध्वनि : 9820053204
रमेश सोनी : निवर्तमान अध्यक्ष-तेरापंथी सभा ठाणे

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for
Marriages, Conferences & Relaxation

Khanvel RESORT SILVASSA

09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555

follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com

sales@khanvelresort.com

तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Samrat Jewellers SJ

नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें

अनोखीलाल नाहर जैन पंकज नाहर जैन

३१ - ए कीर्तीकर मार्केट, दादर (पश्चिम), मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२
मो: ९८९२८०५०६९

तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

भंवरलाल पगारिया जैन
वरीष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
भूतपूर्व अध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
कार्यकारिणी सदस्य
अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, दिल्ली
मुख्य मार्गदर्शक
श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति, बैंगलोर
37, हॉस्पीटल रोड, बेंगलोर, कर्नाटक, भारत- 560053
फोन :- 080 22383557 मो. - 09448238429

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

BINOD KUMAR GANG
Mob: 9435 074716

Nathmal Hemraj / Gang Brothers

Madan Mohan Road, Karimganj,
Assam, Bharat - 788711

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

M/s Sampat Lal Daga
Mine Owner

Best Quality Ball Clay, Highly Plastic Clay,
Mudh Clay, Bikaner Clay, Engope Clay,
Silica Sand, Red and Yellow Ochers etc.

Rohit Daga Jain Mohit Daga Jain
Mob. 09829218779

1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner, Rajasthan, Bharat- 334001

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

युवा समाजसेवी, गौ सेवक कार्य सम्राट बैंगलुरू निवासी महेंद्र मुणोत के कार्यों की झलकियां

जय महादेव युवा संघ केंगेरी उपनगर द्वारा महाशिवरात्रि के उपलक्ष में चेलेगट्ट स्थित श्री चामुंडेश्वरी माताजी मंदिर में १४वां वार्षिकोत्सव कार्यक्रम महाशिवरात्रि महोत्सव 'एक शाम भोलेनाथ के नाम' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भजन कलाकार दुर्गा जसराज, मनीष परिहार ने एक से बढ़कर एक भजनों की प्रस्तुति दी, जिससे माहौल भक्तिमय हो गया। दिल्ली के मनोज रिया ग्रुप द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम से दर्शक भाव विभोर हो गए. मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी महेन्द्र मुणोत ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'महाशिवरात्रि के पावन प्रसंग पर सच्चे मन से भगवान शिव के चरणों में हमारे में छुपी हुई बुराइयों को अर्पण कर दें तो शिव की कृपा हमें प्राप्त होगी.' आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन मनीष मुंण्डवा ने किया।

श्री बीरेश्वर देवस्थान बापूजी नगर में महाशिवरात्रि के उपलक्ष में आयोजित विशेष पूजा महोत्सव कार्यक्रम में मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी महेन्द्र मुणोत ने भगवान शिव के दर्शन कर आशीर्वाद लिया एवं अपने वक्तव्य में कहा कि 'शिव का भाव ही कल्याण है' मंदिर के पदाधिकारियों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

एचपीएल क्रिकेटर्स द्वारा व्यडरहल्ली भरत नगर के खेल मैदान में क्रिकेट स्पर्धा एचपीएल कप का आयोजन किया गया, जिसमें १० से भी ज्यादा टीमों ने हिस्सा लिया। मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी विद्यार्थी मित्र महेन्द्र मुणोत ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें होली की अग्रिम शुभकामनाएं दीं। प्रवीण एवं मोहन कुमार ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

बन्नेरघट्टा रोड स्थित आशापुरा माता मंदिर में आशापुरा गैर मंडल बेंगलूरु ने मनमोहक प्रस्तुति दी जिससे राजस्थानी संस्कृति जीवंत हो गई। मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी महेन्द्र मुणोत ने अपने वक्तव्य में जन समूह को होली की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि 'पर्व हमें अपनी संस्कृति से जोड़ते हैं, होली खुशियों एवं रंगों का पर्व है,' सोनाणा खेतलाजी के भक्त दिलीप सोनी, सज्जनराज सांखला, हरिकिशन गहलोत, रुघाराम सांखला, पुखराज माली, हरीश चौहान एवं अन्य सदस्यों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

नवोदय शिक्षण संस्थान द्वारा नंदिनी लेआउट स्थित वीर रानी कित्तूर चेन्नम्मा खेल मैदान में वार्षिकोत्सव नवोदय कला धारे का आयोजन किया गया. विद्यार्थियों ने मन भावन सांस्कृतिक प्रस्तुति दी, जिससे श्रोता मंत्र मुग्ध हो गए। मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी विद्यार्थी मित्र महेन्द्र मुणोत ने मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया। आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

महालिंगेश्वर सेवा ट्रस्ट बेंगलूरु द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि युवा समाज सेवी महेन्द्र मुणोत को सम्मानित करते हुए रवीश एवं अन्य, ये सभी उक्त जानकारी भूपेन्द्र एस. भानावत ने एक विज्ञप्ति द्वारा 'जिनागम' को भेजी है।

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम

Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

जीवों को कमलजीवन देने आए तीर्थंकर महावीर के
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

अभय भाकचंद छाजेड़
भ्रमणध्वनि : 09822023429
जनरल सेक्रेटरी
महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमिटी
क्यू - 323, आदिनाथ सोसायटी,
पूना-सतारा रोड़, पूना, महाराष्ट्र, भारत-411037

जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व
पर हार्दिक शुभकामनाएं

M. SUSHIL KUMAR BOHARA
Mob.: 9443352884
M/S. SUMANGALI JEWELLERS
No.15, Thiruvoodal Street, Tiruvannamalai,
Tamil Nadu, Bharat - 606601
Ph.: 04175-222852/53 / Mob.: 9025233972
email: info@sumangalijewellers.in
BIS 100% HALL MARKED JEWELLERY
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

भारत को भारत ही बोलें, INDIA नहीं - आचार्य श्री विद्यासागर

एक कागज का टुकड़ा गवर्नर के हस्ताक्षर से रुपैया बन जाता है, जिसे तोड़ने-मरोड़ने व गंदा होने से भी उसकी कीमत कम नहीं होती, इसी तरह हमारे आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी, सुख, दुख, गर्मी, सर्दी रहने या नहीं रहने से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ा, जिस घड़ी में रहे, उनकी तप-साधना इतनी उत्कृष्ट थी की लोग उनके पीछे यूं नंगे पांव दौड़े भागे जाते थे, उनके साथ चमत्कार तो होते रहते थे, उसको हम कोई भी शब्दों में बयां नहीं कर सकते। आचार्य श्री को आजीवन नमक, दही, तेल, चीनी, सभी फलों का, थूकने का, चटाई और भी बहुत भौतिक सभी साधनों का त्याग था, करोड़ो-अरबो रुपए उन पर न्योछावर होते थे, पर उन्होंने कभी पैसे को हाथ नहीं लगाया, हथकरघा जैसे गृह उद्योग पुनः पूरे भारत में उनके द्वारा स्थापित हुआ। आचार्य श्री द्वारा स्थापित १० नहीं, २० नहीं, पूरी १३२ गौशाला पूरे भारतवर्ष में चल रही है, उनके द्वारा चलाई गई 'प्रतिभास्थली', जहां पर लड़कियों की उच्च शिक्षा बहुत ही अच्छे ढंग से चल रही हैं, उनका उद्देश्य भी यही था इंडिया नहीं भारत को भारत ही कहो, स्वदेशी अपनावो। हर कोई दीवाना था उनकी एक मुस्कान का, संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी ने समाधि १८ फरवरी २०२४ को डोंगरगढ़ में ली।

'राजस्थान स्थापना दिवस' ३० मार्च को आचार्य श्री पर एक नाटक जे.बी. नगर, पिरामल गार्डन में प्रस्तुत किया गया, उसके कलाकार थे तनिष्क, मीनाक्षी, रश्मि, वंदना, चंदा, रीना, कशवि, भूमिका, नीलांजना, शर्मिला, राजुल, चेतना, अंशिका, निर्विका अस्वी, अवधी, नाटिका प्रस्तुति को उपस्थित जन समुदाय ने एकटक शांतिपूर्वक देखा और एक ही बात कही कि आज से हम अपने देश को केवल 'भारत' ही बोलेंगे, INDIA नहीं। जय भारत!

- रश्मि जैन
जे.बी.नगर अंधेरी पूर्व
मुंबई, महाराष्ट्र, भारत- ४०००५९
मो: ९६९९११०५०६

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

तप और दान के प्रवाह का पर्व- अक्षय तृतीया

ॐ
राघशुक्लतृतीयाया, दानमासीत् तदक्षयम्
पर्वाक्षय तृतीयेति, ततोऽघापि प्रवर्तते
श्रेयांसोपज्ञमवनौ, दान-धर्म प्रवृत्तवान्
स्वाम्युपेतमिवाऽ शेषव्यवहार नयक्रमः

'अक्षय तृतीया' का दिन महामंगलकारी होता है, इस दिन की महिमा मात्र जैनों में ही नहीं, अजैनों में भी है, वर्ष में कुछ दिन ऐसे हैं जो 'बिना पूछे मुहूर्त' कहलाते हैं, वैशाख सुदी तीज की भी यही महिमा है, इस अवसर्पिणी काल में सर्वप्रथम दान धर्म का प्रारंभ इसी दिन से शुरु हुआ था। अक्षय तृतीया - यह ऐसा त्यौहार है, जिसका महात्म्य बहुत बड़ा और व्यापक है। हिंदू, वैदिक और जैन परंपराओं में 'अक्षय तृतीया' का महत्व बहुत ज्यादा माना गया है, यह जिज्ञासा उठनी स्वाभाविक है कि इस पर्व का नाम 'अक्षय तृतीया' क्यों पड़ा?

अ-क्षय, मतलब, जिसका क्षय नहीं, अर्थात हर हाल में यथावत।

वैशाख मास की इस तृतीया का कभी 'क्षय' नहीं होता, इसीलिए इसे 'अक्षय तृतीया' कहा गया है। भारतीय ज्योतिष शास्त्रानुसार तिथियाँ चंद्रमा और नक्षत्रों की गतिनुसार बनती है, जैसे चंद्रमा की कला घटती-बढ़ती है वैसे तिथियाँ भी घटती-बढ़ती है, एकम से लेकर अमावस्या, पुनम आदि सभी तिथियों में घटबढ़ी चलती रहती है, किंतु वैशाख सुदी ३ याने आखा तीज की तिथि हजारों वर्षों में क्षय तिथि नहीं बनी, यह कभी नहीं घट-बढ़ी, इसलिये इसे अक्षय तिथि कहा गया है, इसे आखा तीज भी कहा जाता है।

'वैशाखमासे राजेन्द्र, शुक्लपक्षे तृतीय का
अक्षय सा निधि प्रोक्ता कृतिका रोहिणी युता

अंक शास्त्री कहते हैं - ३ और ९ की संख्या ऐसी है जो कभी कम नहीं होती, ९ को जोड़ो तो वह हमेशा ९ ही रहता है। (9 X 1=9, 9X2 = 18 = 9, 9X3 =27 = 9) तीन का अंक तो और करामाती है, दुगुना, तिगुना होकर फिर अपने मूल रुप में आ जाता है। कभी घटता नहीं (3X1=3, 3X2=6, 3X3=9, 3X4=12 =3)

वैदिक परम्परा में कहा जाता है कि ऋषि जमदग्नि के पुत्र, परम बलशाली परशुरामजी का जन्म आखा तीज के दिन हुआ था। कुछ लोग मानते हैं कि सतयुग का प्रारम्भ भी इसी दिन हुआ था, इसलिये यह युगादि तिथि भी है। एक बार राजा युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से 'आखा तीज' पर्व की विशेषता पूछी तो उन्होंने बतलाया - वैशाख शुक्ल तृतीय के पूर्वाह्न में जो यज्ञ, दान, तप आदि पुण्य कार्य किये जाते हैं उनका फल अक्षय होता है, यह विश्वास है कि इस दिन का मुहुर्त सबसे श्रेष्ठ है, इसलिये विवाह, गृहप्रवेश, व्यापार आदि का शुभारंभ अक्षय तृतीया के दिन बहुत होता है। गाँवों में तो इस दिन सामुहिक विवाह होते हैं, कई जगह तो आज भी छोटे-छोटे बच्चों का विवाह कर दिया जाता है, इस दिन सोना खरीदना भी शुभ माना जाता है ताकि घर में लक्ष्मी माँ की कृपा बनी रहे, इस दिन वृंदावन में साल में एक बार बिहारीजी के चरणों के दर्शन होते हैं,

इस दिन मंदिरों में बिहारीजी का चंदन श्रृंगार होता है। 'अक्षय तृतीया' को बद्रीनाथ धाम के द्वार भक्तों के लिये खुलते है, गंगा-स्नान का भी इस दिन बहुत महत्व है।

जैन परम्परा में 'अक्षय तृतीया' के साथ अत्यंत महत्वपूर्ण घटना जुड़ी है, इसलिये जैनों में इस दिन का बहुत अधिक महत्व है। प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ का एक वर्ष के कठिन तप के बाद, इसी दिन श्रेयांसकुमार ने (जो कि प्रभु के पपौत्र थे) इक्षु (गन्ने) रस द्वारा पारणा करवाया था, इस तिथि को अक्षय पुण्य प्रदान करने वाली तिथि कहा जाता है। 'अक्षय तृतीया' को 'दान और तप' दोनों का अद्‌भुत संबंध जुड़ा होने के कारण ही यह 'अक्षय' बन गया।

तीर्थंकर ऋषभदेव ने चैत्र कृष्णा अष्टमी के दिन बेला (दो उपवास) की तपस्या के साथ दीक्षा ग्रहण की, उनके साथ अन्य ४००० व्यक्तियों ने भी दीक्षा अंगीकार की, इस तपस्या के साथ दो मुख्य बातें थी- अखण्ड मौन तथा पूर्ण निर्जल तप। अखण्ड मौन व्रत धारण कर भगवान ने चऊविहार बेला किया, उसके पश्चात विशेष अभिग्रह ग्रहण कर भिक्षा के लिए नगर में पधारे, परंतु कहीं भी शुध्द आहार नहीं मिलने के कारण ऋषभदेव नगर में भ्रमण करके वापस लौट गये और पुनः आगे का तप ग्रहण किया, इस तरह तप करते हुए १३ महीने और १० दिन व्यतीत हो गये, अंत में वैशाख शुक्ल तृतीया के दिन प्रभु हस्तिनापुर पधारे, उस समय बाहुबली के पौत्र एवं राजा सोमप्रभ के पुत्र श्रेयांसकुमार युवराज थे, उन्होंने उसी रात एक विचित्र स्वप्न देखा - 'सोने के समान दीप्ति वाला सुमेरु पर्वत श्यामवर्ण का कांतिहीन सा हो रहा है, मैने अमृतकलश से उसे सींचकर पुनः दीप्तिमान बना दिया है' उसी रात्रि में सुबुद्धि **शेष पृष्ठ ३१ पर...**

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार,
महावीर प्रभु की जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Mukesh Jain
Mob.: 9437210207
शुद्धता ही अमृत है, प्यार ही ज्वेलरी है...
AMRUT KALASH
Jewallars
Gold & Silver Ornaments
916
BIS CERTIFIED
A.T. Patnagada, Dist. Bolangir, Orissa, Bharat-767025
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

Omkarmal. T. Jain
Mob: 9940040816, 9444020216
KWALITY STEELS
Stockist: Jindal & S.S.Raw Material Sheet/Coils,
Agent: Shah Foils (P.) Ltd. Ahemdabad No. 206, Mint Street, Parktown, Chennai, Tamilnadu, Bharat-600 003
GOODRICH GASKET (P) LTD.
40, Velichai Village, Next to Pasupati Eswaran, Temple, Vandalur - Kelambakkam Road, Chennai, Tamilnadu, Bharat - 600 048
FLOSIL GROUP OF COMPANIES
Chennai

पृष्ठ ३० से... नाम के श्रेष्ठि ने सपना देखा 'सुरज से निकली हजारों किरणों को श्रेयांसकुमार ने पुन: सुर्य में स्थापित कर दिया, जिससे वह सुरज अत्याधिक चमकने लगा।

उस रात सोमयश राजा ने भी स्वप्न देखा 'अनेक शत्रुओं के द्वारा घिरे हुए राजा ने श्रेयांस कुमार की सहायता से शत्रु राजा पर विजय प्राप्त कर ली' स्वप्न के वास्तविक फल को तो कोई जान न सके परंतु सभी ने यही कयास लगाया कि इसके अनुसार आज श्रेयांसकुमार को विशेष लाभ प्राप्त होगा?

राजकुमार श्रेयांस इस विचित्र सपने के अर्थ पर विचार करते हुए गवाक्ष में बैठे हुए थे, उसी समय में राजमार्ग पर प्रभु ऋषभदेव का आगमन हुआ, हजारों लोग उनके दर्शन हेतु विविध प्रकार की भेंट सामग्री लेकर आ रहे थे (लेकिन प्रभु के लिये उन भेटों का कोई महत्व नहीं था, वे तो त्यागी थे, शुध्द आहार की खोज में थे) जनता का कोलाहल, बढ़ती भीड़ और उन सबके आगे चलते प्रभु को देखकर श्रेयांसकुमार विचार में पड़ते हैं और सोचते 'आज क्या बात है, यह महामानव कौन आ रहा है, इस प्रकार का तपस्वी साधक मैंने पहले भी कहीं देखा है, उनकी स्मृतियाँ अतीत में उतरती हैं, चिन्तन की एकाग्रता बढ़ती है और उन्हें जाति-स्मरण ज्ञान हो जाता है' वह जान लेते हैं कि यह मेरे परदादा दीर्घ तपस्वी प्रभु आदेश्वर हैं और शुध्द भिक्षा के लिये इधर पधार रहे हैं, श्रेयांसकुमार महल से नीचे उतरते हैं और प्रभु को वंदन कर प्रार्थना करते है 'पधारो प्रभु! पधारो' उसी समय राजमहल में इक्षुरस से भरे १०८ घड़े आये थे, शुध्द और निर्दोष वस्तु और वैसी शुध्द भावना कुमार की, श्रेयांसकुमार इक्षुरस द्वारा प्रभु को पारणा करवाते हैं। उस समय देवों ने आकाश में देव दुंदभि बजाई, रत्नों की पंचवर्ण के पुष्पों की, गंधोदक की और दिव्य वस्त्रों की, सुगंधित जल की वृष्टी की। अहोदानं! अहोदानं की घोषणा हुयी। पांच दिव्यों की वर्षा हुई। जैन साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका भी इस तरह एक साल का व्रत रखते हैं (१ दिन उपवास दूसरे दिन बियासणा) और आखा तीज के दिन गन्ने के रस द्वारा पारणा करते हैं, इस दिन रस पीना और मंदिर में गुड़ चढ़ाना शुभ माना जाता है। तप और दान की दिव्य महिमा से आज का दिन (याने आखा तीज) पवित्र हुआ। भगवान ऋषभदेव का प्रथम पारणा होने से इस अवसर्पिणी काल में श्रमणों को भिक्षा देने की विधि का प्रथम ज्ञान देने वाले श्रेयांसकुमार हुए, सचमुच ऋषभदेव के समान उत्तम पात्र, इक्षु रस के समान उत्तम द्रव्य और श्रेयांसकुमार के भाव के समान उत्तम भाव का त्रिवेणी संगम होना अत्यंत ही दुर्लभ है।

तप और दान की आराधना करने वाला अक्षय पद प्राप्त कर सकेगा, यही संदेश इस पर्व में छिपा है।

जैनधर्म में मोक्ष प्राप्ति के चार मार्ग बताये गये हैं। दान, शील, तप और भाव। 'अक्षय तृतीया' को दान और तप इन दोनों का अद्‌भुत संबंध जुड़ा होने के कारण यह अक्षय बन गया।

विशेष:

प्रभु ऋषभदेव के पहले भरत क्षेत्र में युगलिक काल **शेष पृष्ठ ३२ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

तीर्थंकर महावीर विश्व के प्रथम वैज्ञानिक

चिकलठाणा: तीर्थंकर महावीर स्वामी ढाई हजार वर्ष पूर्व इस धरती पर अवतरित हुए, जैन धर्म के अंतिम व २४ वें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने सत्य, शांति, अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांत, सिद्धांत का प्रतिपादन किया। वे राजपुत्र थे, वैभवशाली जीवन होने के बावजूद वे विरक्त हुए, संसार से लगाव नहीं था, भविष्य में प्रकाशमान जीवन दिखाई देता था,

सन्यास जीवन में आनंद की अनुभूति होती थी, आज भी जब हम चारित्र्य चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर जी महाराज के जीवन की ओर देखते हैं तो हमें आचार्य मुनिराज में साक्षात महावीर स्वामी नजर आते हैं। ढाई हजार वर्ष पूर्व महावीर स्वामी विचरण करते तो पशु हत्याएं, अत्याचार, हिंसा देखकर द्रवित हो जाते, उन्होंने अहिंसा सिद्धांत का प्रतिपादन कर तत्कालीन समाज को हिंसा मुक्त करने का महान प्रयास किये, राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला के राजकुमार थे, राजपत्र होने के बावजूद सन्यासी रहे, परिग्रह से अलिप्त रहे। महावीर स्वामी का विचार था मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है, कर्म के अनुसार मनुष्य का पद स्थापित होता है, जन्म नहीं कर्म के कारण मनुष्य गति निर्धारित होती है। महावीर स्वामी की अहिंसा दृष्टि अत्यंत सूक्ष्म थी, पत्थर, चट्टान, पौधे, वनस्पति में भी जान होती है, यह सर्वोच्च सिद्धांत ढाई हजार वर्ष पूर्व महावीर स्वामी ने विश्व के सामने रखा।

- एम.सी. जैन

पृष्ठ ३१ से... था, इस वजह से लोगों में धर्म की प्रवृत्ति का अभाव था। युगलिक काल में सभी मनुष्य युगल (पुत्र-पुत्री) के रुप में पैदा होते थे, प्रभु के सौ पुत्र और दो पुत्रियां थी, जेष्ठ पुत्र को ७२ कलाएं सिखलायी थी, भरत ने भी अपने सभी भाईयों को ये कलाएं सिखलायी, दूसरे पुत्र बाहुबली को प्रभु ने हस्ति, अश्व, स्त्री और पुरुष के अनेक प्रकार के भेदवाले लक्षणों का ज्ञान दिया।

पुत्री ब्राह्मी को दाहिने हाथ से अट्ठारह लिपियां बतलायी और पुत्री सुंदरी को बायें हाथ से गणित की शिक्षा दी, उनकी सारी मनोकामनाएँ कल्पवृक्ष के द्वारा पूर्ण हो जाती थी, सभी युगलिक भद्रिक परिणामी होने से देवगति प्राप्त करते थे, उस समय विवाह व्यवस्था नहीं थी। उस काल में सर्वप्रथम विवाह प्रभु ऋषभदेव का हुआ था। लग्न के विधि-विधान हेतु स्वयं इंद्र महाराजा उपस्थित थे।

प्रभु ने न्याय नीति और व्यवहार धर्म की शिक्षा दी। अपना कल्प (आचार) समझकर प्रभु ने ही पुरुषों को ७२ कलाएं, स्त्रियों को ६४ कलाएं और सभी प्रकार के १०० शिल्प सिखाए थे, परंतु दान आदि धर्मों का बोध नहीं दिया था क्योंकि तारक तीर्थंकर को जब तक केवलज्ञान नहीं प्राप्त हो जाते, धर्म का बोध नहीं देते, असत्य भाषण की संभावना बनी रहती है, केवलज्ञान के पश्चात् प्रभु ने भरतक्षेत्र के जीवों को धर्म की शिक्षा दी। १८ कोडाकोडी सागरोपम से मोक्षमार्ग का जो द्वार बंद था, प्रभु ने उसे खोला, अत: उनका असीम उपकार हम सब पर है।

अक्षय तृतीया जो इस वर्ष ३० अप्रैल २०२५ को है, उसका महत्व क्यों है? जानिए कुछ महत्वपुर्ण जानकारी..

- आज ही के दिन मां गंगा का अवतरण धरती पर हुआ था।
- महर्षी परशुराम का जन्म आज ही के दिन हुआ था।
- मां अन्नपूर्णा का जन्म भी आज ही के दिन हुआ था।
- द्रोपदी को चीरहरण से कृष्ण ने आज ही के दिन बचाया था।
- कृष्ण और सुदामा का मिलन आज ही के दिन हुआ था।
- कुबेर को आज ही के दिन खजाना मिला था।
- सतयुग और त्रेता युग का प्रारम्भ आज ही के दिन हुआ था।
- ब्रह्मा जी के पुत्र अक्षय कुमार का अवतरण भी आज ही हुआ था।
- प्रसिद्ध तीर्थ स्थल श्री बद्री नारायण जी का कपाट आज ही खोला जाता है।
- बृंदावन के बांके बिहारी मंदिर में साल में केवल आज ही के दिन श्री विग्रह चरण के दर्शन होते हैं, अन्यथा साल भर वो वस्त्र से ढके रहते हैं।
- इसी दिन महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ था। 'अक्षय तृतीया' अपने आप में स्वयं सिद्ध मुहूर्त है कोई भी शुभ कार्य का प्रारम्भ किया जा सकता है।

- मैं भारत हूँ

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

सारा जमाना पदम जैन का दीवाना

हजारों परिवारों को रिश्तों में जोड़ने वाले पदमचंद जैन का हर कोई दीवाना

वैवाहिक दुनिया के बेताज बादशाह के रूप में सुप्रतिष्ठित पदमचंद जैन की आज दुनिया दीवानी है। दुनिया जिन उद्योगपतियों, फिल्मी सितारों की दीवानी है, वे सारे पदमचंद जैन के दीवाने है। और हो भी क्यों नहीं? आखिर देशभर में अब तक नामी-गिरामी परिवारों को आपस में वैवाहिक रिश्तों में जोड़ने का कीर्तिमान जो स्थापित किया है। जयपुर में एक शादी के आयोजन में जीतो के श्रेष्ठीवर्य से मुलाकात हुई। इनमें तारक मेहता का उल्टा चश्मा के फेम शैलेष लोढा, शेयर मार्केट के दिग्गज मोतीलाल ओसवाल, प्रमुख बिल्डर सुभाष रूणवाल, सेलो ग्रुप के प्रदीप राठौड, इन्स्पीरा के प्रकाश जैन, डॉ. सुरेन्द्र जैन युएसए, प्रकाश कानुगो, तेजराज गुलेच्छा, किशोर खाबिया, राकेश मेहता, शांतिलाल कवाड़, संदिप बाफना सहित अनेक दिग्गजों से मुलाकात हुई। पदमचंद जैन ने अपनी चिर परिचित शैली में सभी का आत्मीय स्वागत किया। रूणवाल परिवार में वैवाहिक आयोजन के अवसर पर परिवार को बधाई दी। पूरे भारत में ओसवाल जैन बच्चों के वैवाहिक बायोडेटा के लिए पदमचंद जैन एक जाना-माना नाम है। राजनीति, प्रशासनिक, समाजसेवी, ब्यूरोक्रेटस उद्योगपति, सहित हर क्लास परिवार के बच्चों के बायोडेटा उपलब्ध है। सच में इतनी दीवानगी देखी नहीं कहीं। हर जुबां पर पदमचंद जैन का नाम।

▪ आपके सपनों को पूरा करने वाली टीम ▪

आईजेवीओ यानी पदम परिवार की यह टीम आपके बच्चों के लिए तलाशती हैं एक-से-बढ़कर एक सुंदर रिश्तों वाला बायोडाटा

दुल्हन वही जो पिया मन भाए, बहु वही जो सास मन भाए

रिश्तों के बेताज बादशाह **पदमचंद जैन**

।। श्री पार्श्वनाथाय नमः ।।

रिश्तों का मंडप आई जे वी ओ

विश्वस्तरीय ओसवाल-दिगम्बर जैन एवं वैश्य समुदाय के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

9314510196 / 9602623456

FCP JITO
पदमचंद जैन

प्रोफेशनल, सीए, पायलट इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, फिल्म, राजनैतिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-युवतियों के लिए जांचे परखे वैवाहिक रिश्तों का खजाना

1 जून से 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

IJ VO

जैन - वैश्य वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव

एक छत के नीचे उपलब्ध सेवाएं

वैवाहिक-रोजगार, छात्रवृत्ति, विधवा पेंशन, मेडिकल हेल्प, प्रशासनिक एवं कानूनी सलाह, धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सदैव अग्रणी सहयोगी

इंटरनेशनल जैन एवं वैश्य ऑर्गनाइजेशन
1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626

अपनों से हो अपनों का रिश्ता

इस केन्द्र की स्थापना से लेकर अब तक लगभग 50 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्तों के बायोडेटा आ चुके हैं और निरंतर वृद्धि हो रही है। इस केन्द्र के कम्प्यूटर फीड बायोडेटा में बड़ी आसानी से मनवांछित रिश्ते के लिए बायोडेटा पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाते हैं। देश में आज इतना बड़ा नेटवर्क कहीं देखने को नहीं मिलता जहां सभी बायोडेटा वेरीफाईड हो अर्थात प्रत्येक बायोडेटा की पूर्ण सूक्ष्मता से जांच की जाती है, उसके बाद ही बायोडेटा प्रोसेस में अग्रेषित होते हैं। इस केन्द्र में देश-विदेश के जैन-वैश्य समुदाय के हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के वैवाहिक बायोडेटा उपलब्ध हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा हो, सी.ए. हो, आई पीएस हो या राजनीति, समाजसेवा के क्षेत्र से हो, देश का ख्यातनाम औद्योगिक घराना हो या फिर मीडिया हो या फिल्मी क्षेत्र हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के बायोडेटा का नायाब खजाना है। संकोच नहीं, सम्पर्क करें : पदमचंद जैन -

सेवा के सरोकार
छात्रवृत्ति
मेडिकल शिक्षा
रोजगार
विधवा पेंशन
उक्त आवेदकों की जानकारी पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है।

अशोक सिरोया (अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष) | चंद्रराज सिंघवी (राष्ट्रीय अध्यक्ष) | डॉ. प्रकाश गोलेछा (योजना मंत्री) | नरेन्द्र कुमार जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष, यू.वि) | बसंत जैन (राष्ट्रीय संगठन मंत्री) | संजय जैन (कोर्डिनेटर) | सुरेन्द्र कुमार जैन (राष्ट्रीय प्रचार मंत्री)

सेवा के पथ पर अग्रसर टीम आईजेवीओ

1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, वैभव लॉन के पास, हनुमान मंदिर के सामने, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626 / 4010196 email: neerapadamjain@gmail.com

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

Basant Kumar Chopra Jain
Mob. 09631740589
Post. Naharia Bazar,
Dist. Madhubani, Bihar, Bharat- 847108
भारत को 'भारत' ही बोला जाए   एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

floorwalk
Surfaces INDIA FLOORING PVT. LTD.
WOODEN FLOORING
CARPET TILES
J. M. Dugar - 98202 33262
Amit Dugar - 98191 92285
Sumeet Dugar - 98339 83457
info@surfacesindia.co.in
www. surfacesindia.co.in
@surfacesindia

विश्व नवकार मंत्र दिवस की तैयारियों को लेकर जीतो पदाधिकारियों की महत्वपूर्ण बैठक

कोलकाता: समज्ञा विश्व नवकार मंत्र दिवस की भव्य तैयारियों को गति देने के लिए जीतो (जीतो) के पदाधिकारियों ने इंडियन पॉलिटिकल एक्शन कमिटी (आईपैक) के चेयरमैन प्रतीक जैन से मुलाकात की, इस महत्वपूर्ण बैठक में तैयारियों की समीक्षा की गई। वाइस चेयरमैन निर्मल बिंदायका, संजय काला, रौशन जैन, मयंक जैन, अनिता गंगवाल, आदित्य श्यामसुखा और वैभव जैन की प्रभावशाली उपस्थिति रही। बैठक के दौरान कन्वेनर दिनेश जैन गंगवाल ने कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की और आयोजन को भव्य एवं सफल बनाने के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी, इस अवसर पर प्रतीक जैन ने 'जीतो' के प्रयासों की सराहना की और इस आयोजन को ऐतिहासिक बनाने के लिए हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया। आगामी विश्व नवकार मंत्र दिवस को लेकर समाज में उत्साह और उमंग का माहौल बना हुआ है और यह आयोजन अध्यात्म, एकता और सकारात्मक जा रहा है।

परम पू. आचार्य पद्मश्री चुनावी महासतीजी के सुशिष्या पू. दिव्याश्रीजी और पू. शास्वतजी महासतीजी के साथ विश्व नवकार महामंत्र १ अप्रैल २०२५ के कार्यक्रम में जीतो के चेयरमैन धर्मेंद्र जैन, कार्यक्रम के संयोजक दिनेश गंगवाल, चंद्रेश मेधाणी, राजेन्द्र जैन, बिनोद संचेती, अतुल दोषी, केतन दोषी, भरत देसाई, किर्ती सेठ, पप्पू खारा और भरत बोरा ने भवानीपूर के कामाणी जैन भवन में महासती जी से नेताजी इनडोर स्टेडियम पधारने का निमंत्रण दिया।

क्षमा दिवस बने राष्ट्रीय त्योहार

क्षमा वीरस्य भूषणम्

बहुविधता यह भारतीय संस्कृती का मूलाधार है, अलग-अलग भाषा, धर्म, पंथ, रीतीरिवाज, विचारधारा ये सारे अपनी भारतीय संस्कृती की उदात्तका के चरण कमलों पर बहुत ही सुख-चैन से एकसाथ निवास करते हैं। हजारों वर्ष की इस भारतीय संस्कृती का अलगपण है वो उसके सर्वसमावेशकता। दुनिया में जो भी कुछ अच्छा है वो अपने में बहुत ही सहजता से समा लेने की अद्भुत क्षमता इस संस्कृती में कूट कूट कर भरी हुई है, इसीलिए दुनिया के किसी भी देश में नहीं इतनी विविधता केवल 'भारत' मे दिखायी देती है। यहां के हर व्यक्ती में वो इस तरह समायी हुई है की अपनी अलग पहचान बताते हुए भी हर किसी के बीच भारतीय संस्कृती ही पनपी हैं, सिद्ध हो जाता है, यहां के मूल निवासी को पहचान पाना भी अब असंभव सा है, बाहर के किसी भी देश के नियम यहां लागू नहीं होते, इतनी विविधता के बावजूद आप सब 'एक' कैसे, इस प्रश्न का उत्तर भी 'एक' ही है और वो है 'भारत' की संस्कृती और सभ्यता...

आधुनिक 'भारत' का निर्माण करते समय भी हमने कई नयी परंपराएं अपनायी। विज्ञान-तंत्रज्ञान के साथ नये उत्स, नयी वेशभूषा, उत्सव ये सारा हमने बहुत ही उत्साह से अपनाया, इस नयेपन को भी हमने अपने भारतीय संस्कृती की चौखट में कुछ इस तरह से ढाल दिया की ये अपनी पुरानी पहचान ही भूल गये। 'भारत' की यही विशेषता पूरे संसार को अपनी ओर आकर्षित करती है। नया, अच्छा कुछ भी स्वीकारने में कभी भी पीछे ना रहनेवाले 'भारत' ने भी दुनिया को कई नयी परंपरायें, विचारधारा से अवगत कराया जो कि पूरी दुनिया में वो बखूबी निभायी जा रही है।

हमारे देश के कुछ मानचिन्ह है, जैसे मोर राष्ट्रीय पक्षी, सिंह राष्ट्रीय पशू, अशोकचक्र, तिरंगा आदी। 'स्वातंत्र्यदिन' और प्रजासत्ताकदिन ये हमारे देश के राष्ट्रीय त्योहार हैं, इसी तरह दिवाली, ईद, ख्रिसमस आदी कई त्योहार अलग-अलग धर्मों की मान्यताएं परंपरा के अनुसार मनाये जाते हैं, लेकिन इसमें एक कमी अक्सर अखरती है की अपने देश में अपनी परंपरा, विचारधारा, सोचों के अनुसार सभी के लिये एक भी त्योहार नहीं है। हमारी संस्कृती की उदारता, महानता को प्रकट करने वाले सभी मिलकर मना सके, ऐसा एक त्योहार होना जरुरी है। परंपरा से चलते आ रहे किसी भी त्योहार में कोई परिवर्तन, बदलाव किये बगैर हमारी उच्चतम परंपराओं को, विचारों को, तत्त्वज्ञान अपने में समा सके, ऐसा एक सर्वसमावेशक त्योहार अपनाने की आज जरुरत है। दुनिया के सामने कई आदर्श प्रस्तुत करनेवाले 'भारत' ने इस त्योहार के माध्यम से एक सर्वसमावेशक, सब विचारधाराओं को साथ लेकर चलनेवाला, उच्च आदर्श प्रस्तुत करनेवाला त्योहार स्थापित करना अत्यावश्यक हो गया है।

'भारत' में कई धर्म, पंथ एकसाथ बड़े ही भाईचारे से गुजर बसर करते हैं, क्योंकि इस देश की संस्कृती ने उन्हें अपने-अपने तरीके से चलने की अनुमती दे दी है। सब धर्मों का मूल एक ही है, सब धर्म मानव उत्थान का ही मार्ग सीखाते है, सब धर्मों का मूलभूत तत्त्वज्ञान हमने बगैर किसी शर्त के और सहर्ष स्वीकार किये, इसीलिये ये संस्कृती इतनी महान बन पायी, प्रत्येक व्यक्ती का जीवन और उन्नत करने के लिये और संवेदन और उदार बनाने के लिये हमने मानवता के कई विचारों को अपनाया। 'क्षमा' यह तत्त्व हमने इसी तरह स्वीकृत किया है, वो हमारे वैयक्तिक और सामाजिक जीवन का एक अविभाज्य अंग है। दुनिया के हर धर्म ने 'क्षमा' को अपने तत्त्वज्ञान में बहुत ही उच्च स्थान दिया है। 'क्षमा मांगना' और 'क्षमा करना' ये दोनों बातें हर धर्म में, तत्त्वज्ञान में अलग-अलग तरह से सम्मिलित हैं।

शेष पृष्ठ ३६ पर...

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार,
महावीर प्रभु की जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Sunderlal Jitenderkumar Bothra
Director
Mob: 9831222999
Silverson Overseas Pvt.Ltd
• FISHING NET • PVC RESIN • TYRE CORD FABRIC
113B, Manohar Das Street, 1st Floor,
Room No. 250, Kolkata, Bharat- 700007
Tel: +91-33-22719848 /0991 Fax: +91-33-22716999
Email: jkbothra@keerin.in Website: www.keerin.in
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार,
महावीर प्रभु की जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं
देवेंद्र कुमार जैन [पाटनी]
505-बी विंग, धरती रेसिडेन्शसी, 150 फीट रोड, रीना मेहता कॉलेज पास,
भायंदर पश्चिम, जिला-ठाणे, महाराष्ट्र, भारत-४०११०१,
दूरध्वनि - ०२२-२८१९८७०३ भ्रमणध्वनि: ९८२१२२३८१८

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ ३५ से... जैन धर्म में क्षमापना पर्व का असाधारण महत्त्व है, इस पर्व का पालन जैन धर्मी बड़े ही श्रद्धा से करते हैं, हर धर्म में बड़ा महत्त्व रखने वाले 'क्षमापना' पर्व को हर व्यक्ती तक उसकी पूरी गरिमा के साथ पहुंचाना, आज की असहिष्णुतापूर्ण वातावरण में अत्यावश्यक बन गया है। हिंदू, मुस्लिम, ख्रिश्चन, बौद्ध, जैन, पारसी, सीख कोई भी धर्म लिजीए, उसमें 'क्षमा' को बहुत बड़ा स्थान दिया गया है, सब धर्मग्रंथों में, त्योहारों मे यह बात बड़ी स्पष्टता से प्रतीत होती है। भगवान श्रीकृष्ण के अवतार कार्य की समाप्ती एक निशाद के बाण से हुआ, अपना देह त्यागते समय भगवन ने उसको स्वर्गप्राप्ती का वरदान दिया, अपने को क्रूस पर चढ़ा कर कील मारने वालों को भगवान क्षमा करे, यही प्रार्थना प्रभू येशू की दिल से निकली थी। कुरआन में कहा गया है की जो क्रोध को काबू में रखकर दुसरों को 'क्षमा' करता है, अल्लाह उसी नेक बंदे से प्यार करता है। गुरु ग्रंथसाहिब में क्षमा करना 'वीरता' का लक्षण माना गया है, भगवान बुद्ध का सारा जीवन ही प्रेम, करुणा और अहिंसा पर आधारित था।

'क्षमाभाव' को अपने जीवन में लाने के लिये, उसके सातत्यपूर्ण आचरण के लिये, अपने संस्कारों में पूरी तरह से उतारने के लिये आज प्रेरक की आवश्यकता है। यह प्रेरणा का काम कर सकता है, एक नया राष्ट्रीय त्योहार। किसी भी जाती या धर्म का नहीं फिर भी यही हो राष्ट्रीय त्योहार, इस त्योहार की एक विशेषता यह भी है की यह धार्मिक, सामाजिक या राष्ट्रीय किसी भी तरह उतनी ही सार्थकता के साथ मनाया जा सकता है, इसे मनाने की कोई नयी संकल्पना भी निश्चित की जा सकती है, यह त्योहार व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक रुप से भी मनाना संभव भी है।

१५ अगस्त और २६ जनवरी ये अपने 'भारत' के दो महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय त्योहार, लेकिन यह दोनों भी त्योहार एक ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित है। 'भारत' की आजादी और प्रजातंत्र को स्वीकार, इन घटनाओं के स्मरण में हम इन्हें मनाते हैं। भारतीय संस्कृती हजारों वर्षों में बनी है, विकसित हुई है, इसके विकसन में कई कठनाईयां, कई मोड़, कई रुकावटें, कई आक्रमण आये, उन सबका सामना करते-करते ही यह संस्कृती और परिपूर्ण, समृद्ध बनती गयी, इस संस्कृती की विकसन के समुद्रमंथन से निकला हुआ एक अनमोल रत्न है 'क्षमा' क्षमा का तत्त्वज्ञान प्रत्येक व्यक्ती के दिल में, दिमाग में और आचरण में भी पूरी तरह से उतारना अत्यावश्यक है, इसके आचरण से ही समाज में बंधुभाव, प्यार बढेगा, सुख-शांती और समृद्धी अपना द्वार खटखटायेगी।

हजारों वर्षों से सभी महापुरुष यही बात हमें बताते आये हैं, लेकिन आज का माहौल देखकर लगता है कि हम उन्हें समझाने में कुछ गलती कर रहे हैं। अच्छी बातें समाज के सामने प्रखरता से लाने के लिये उतनी ही ताकद से कोशीश जरुरी है, हमारी उत्सव प्रियता को ध्यान में रखकर उसी माध्यम का उपयोग करते हुए एक नया त्योहार आज समाज को देना जरुरी है और यह है 'क्षमादिवस' राष्ट्रीय त्योहार के रूप में, किस तरह मनाया जाये, इस पर विचार जरुरी है, यह त्योहार व्यक्ती, समाज, राष्ट्र को लांघकर पूरे विश्व को अपने आगोश में लेनेवाला हो, दुनिया को कई अनमोल तोहफे देने वाले भारत ने 'क्षमापना' दिन को राष्ट्रीय त्योहार के रूप से स्वीकार कर, दुनिया को 'क्षमापना' की ओर जाने का एक नया रास्ता दिखाना ही चाहिये। भारतीय संस्कृती दुनिया की एक प्राचीनतम संस्कृती है, इसकी कई अच्छी बातें दुनिया भर में बड़ी ही प्यार से आचरण में लायी जाती है, जो तत्त्वज्ञान सर्वमान्य है, सर्वस्वीकृत है उस 'क्षमा' के तत्त्वज्ञान को अपनाना आज के हिंसापूर्ण, द्वेषमूलक वातावरण में अत्यावश्यक बन गया है। पाश्चात्य संस्कृती का अंधानुकरण आज फॅशन सा बन गया है, ऐसे समय में फिर एक बार पूर्व की ओर से, भारतीय संस्कृती की ओर से दुनिया को 'क्षमा' का तत्त्वज्ञान देना हमारा कर्तव्य है। 'क्षमापना' को राष्ट्रीय त्योहार के रुप में मनाकर हम दुनिया के सामने एक नया आदर्श त्योहार प्रस्तुत कर सकते है, जो सभी के जीवन में आनंद की, सुख की, समृद्धी की बरसात कर सके, सुखमय जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दे सके।

जय भारत! - **सुनील काला**

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार,
महावीर प्रभु की जय-जयकार जन्म कल्याणक पर्वपर
हार्दिक शुभकामनाएं..

राजेन्द्र जैन (पुर्व विधायक)
सुनीता, निखील, रीचा, अरीहंत
गोंदिया, महाराष्ट्र, मो: 9422130827

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

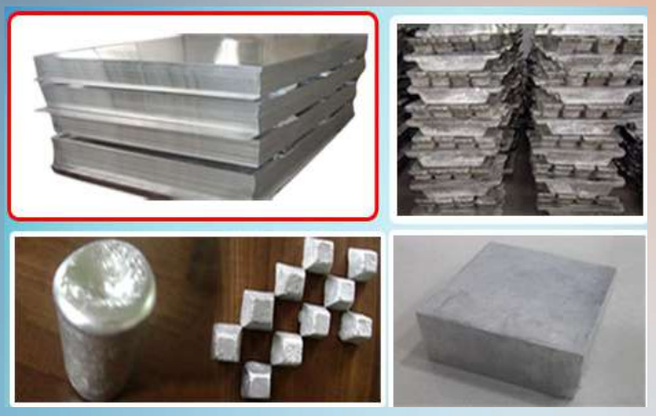

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!!

पिछले ७० सालों में ऐसा कार्यक्रम हमने नहीं देखा ये है 'आपणों राजस्थान'

जे.बी.नगर: राजस्थान स्थापना दिवस के अवसर पर २९-३० मार्च २०२५ को 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' द्वारा मुंबई के अंधेरी पूर्व में स्थित प्राचीनतम राजस्थानी सोसायटी जे.बी.नगर के पिरामल गार्डन में भव्यातिभव्य 'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अध्यक्ष बिजय कुमार जैन मुंबई, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लढ्ढा कोलकाता व अन्य पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं के नेतृत्व में कार्यक्रम शिखरतम बन गया। कार्यक्रम का शुभारंभ २९ मार्च को प्रसिद्ध समाजसेवी डॉ. दीनानाथ केडिया, संगीतकार दिलीप सेन, व्यवसायी जयेश खेमका जी के हाथों द्वीप प्रज्वलन कर किया गया। कार्यक्रम का संचालन निशा लढ्ढा व त्रिलोक सिरसेवाला ने अपनी वाणी कौशल व मधुरता से कार्यक्रम में समा बांध दिया। २९ मार्च को कई रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए, जिसमें सबसे पहले प्रारंभ किया गया 'वेस्ट ऑफ़ द बेस्ट' थीम पर आधारित नन्हे मुन्ने बाल कलाकारों ने अखबारों को एक नया रूप देकर परिधान बनाया, बच्चों ने अपनी कलाकारी से सबका मन मोह लिया। बच्चों का मार्गदर्शन हेमलता दम्मानी, प्रीति शाह, निधि डागा, अंजूरानी ने किया। प्रत्येक बच्चों ने अपने परिधान और व्यक्तित्व के अनुरूप अभिव्यक्ति प्रस्तुत की, तत्पश्चात राजस्थानी नृत्य कलाकारों ने अपनी मनमोहक प्रस्तुति दी, जिस पर सभी दर्शक झूम उठे। प्रसिद्ध नृत्यांगना बरखा पंडित ग्रुप द्वारा केसरिया बालम, धरती धोरा री और कठपुतली नृत्य प्रस्तुत किया गया, तत्पश्चात सम्मान समारोह में डॉ. दीनानाथ केडिया, दिलीप सेन, श्री राजस्थान रिक्रिएशन क्लब के अध्यक्ष अरविंद गाड़िया, भारत विकास परिषद से विनोद मोरवाल का सम्मान स्मृति चिन्ह भेंट देकर किया गया। सम्मान समारोह के पश्चात अखबार से परिधान निर्माण करने वाले बाल कलाकारों को परितोषित किया गया। देश के महानायक महाराणा प्रताप, अहिल्याबाई होल्कर और छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन पर आधारित नाटिका का प्रस्तुति हुयी, इसके पश्चात देशभक्ति पर आधारित संगीत नृत्य का प्रस्तुतीकरण हुआ, जिसने उपस्थित दर्शकों में देश के प्रति समर्पण के भाव और जोश भर दिया। पार्श्वगायक व संगीतकार रवि जैन ने भी राजस्थान की विशेषताओं को बखान करते हुए गीत की प्रस्तुति दी।

३० मार्च २०२५ कार्यक्रम के दूसरे दिन की **शेष पृष्ठ ३९ पर...**

पृष्ठ ३८ से... शुरुआत 'मैं भारत फाउंडेशन' के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन ने अपने वक्तव्य से प्रारंभ किया, तत्पश्चात दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी के जीवन पर आधारित भावपूर्ण नाटक प्रस्तुत की गई, इसके पश्चात बाल गायक कलाकारों द्वारा विभिन्न गीत प्रस्तुत किए, जिसमें विजेता पंखुड़ी रही। राजस्थानी लोक कलाकार पिंकी शर्मा द्वारा भवई नृत्य प्रस्तुत कर सबको अचरज में डाल दिया, यह नृत्य राजस्थान के लोक संस्कृति की झलक दिखलाता है। कार्यक्रम के पश्चात सामान्य अतिथियों का आदर सत्कार किया गया, जिसमें प्रमुख उपस्थिति आर. वी. बुबना, श्रीमती शारदा बुबना, अशोक ममता अग्रवाल रहे। मीडिया को-ऑर्डिनेटर वेदिका जी को भी सम्मानित किया गया है। डॉ. करुणा केडिया ने कहा कि राजस्थानी कॉलोनी को अति सुंदर व सुरक्षित बनाने में डॉ. कुलपति विनोद टिबड़ेवाला जी का विशेष सहयोग रहा, उनकी अनुपस्थिति हमें खल भी रही है, कारण यह है कि वे झुंझुनूं राजस्थान में है और उन्होंने राजस्थान में उच्चस्थरीय शीक्षा संकुल की स्थापना की है।

स्त्री रोग विशेषज्ञ व योग शिक्षिका डॉक्टर भगवती दाधीच का उनके सेवा कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। नूपुर की झंकार कार्यक्रम की विजेता रही अर्चना धानुका को जे. एस. जे. ज्वेलर्स के मितुल खेमका द्वारा डायमंड रिंग इनाम स्वरूप दिया गया। राजस्थानी आभूषणों और पहनावा में सजी-धजी महिलाओं ने रैंप वॉक कर अनूठी प्रस्तुति दी। उपस्थित जनसमुदाय ने अपनी राजस्थानी आवाज में कहा कि

याण रो कार्यक्रम आपरो जे.बी. नगर माय ७० सालां माय कोणी होयो, बोत आणंद आयो! जय-जय राजस्थान, जय भारत! **- मैं भारत हूँ**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन की अद्वितीय सोच को नमन

- आनंदराज आम्बेडकर, राष्ट्रीय अध्यक्ष रिपब्लिकन सेवा

मुंबई: ७ अप्रैल २०२५, रिपब्लिकन सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पिपुल एजुकेशन सोसायटी के अध्यक्ष, भारत माँ के लाडले श्री आनंदराज यशवंत आंबेडकर से मुंबई के हुतात्मा चौक में स्थापित सिद्धार्थ कॉलेज के प्रांगण में सदिच्छा भेंट हुयी। ४ मई २०२५ को आयोजित कार्यक्रम 'भारत' के महानायकों का सम्मान' में आमंत्रित करने के लिए 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन व राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री रवि जैन ने मुलाकात की।

श्री आनंदराज जी ने कहा! आप लोग 'भारत नाम सम्मान' के लिए जो कार्य कर रहे हैं व अद्वितिय है, मैं और मेरी 'रिपब्लिकन सेना' के कार्यकर्ता 'जय भीम-जय भारत' ही बोलते हैं, देश का नाम तो एक ही रहना चाहिए 'भारत' और आप जिन 'महानायकों' का सम्मान कर रहे हो यह तो अद्वितीय ही नहीं, अति सराहनीय भी है, इन महानायकों से आम

आदमी का जीवन सुरक्षित व स्वच्छ रहता है।

उपस्थित थे बायें से संजीव बाउधंकर, संध्या ढोके, अधिवक्ता संघराज रुपवते, रवि जैन, आनंदराज जी आम्बेडकर, बिजय कुमार जैन के साथ अमन आनंदराज आंबेडकर। जय भारत! **- मैं भारत हूँ**

महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर विश्व शांति सद्भावना

मुंबई: भगवान महावीर जन्म कल्याणक के निमित्त प्रभादेवी स्थित रविन्द्र नाट्य मंदिर सभागार में मीडिया ग्रुप एवं अहिंसा विश्व भारती के संयुक्त संयोजन में 'अंतर धार्मिक संवाद द्वारा विश्व शांति सद्भावना' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह में महाराष्ट्र के राज्यपाल सी. पी. राधाकृष्णन एवं बिहार के राज्यपाल डॉ. आरिफ मोहम्मद खान प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे, साथ ही जैन आचार्य लोकेश, मंत्री मंगल प्रभात लोढा, बौद्ध भिक्षु भदंत राहुल बौधि, महाराष्ट्र के पूर्व डीजीपी पी. एस. पसरीचा आदि उपस्थित थे। जैन आचार्य लोकेश ने कहा कि वैश्विक सद्भावना

के लिए धार्मिक संवाद जरूरी है, उन्होंने कहा कि भगवान महावीर के दर्शन को अपनाने से विश्व शांति और सद्भावना स्थापित करना संभव है। युद्ध, हिंसा, पर्यावरण प्रदूषण आदि जैसी वैश्विक समस्याओं का समाधान जैन सिद्धांतों में समाहित है। महाराष्ट्र के राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन ने सम्पूर्ण जैन समाज को तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जैन समाज का राष्ट्र निर्माण एवं मानव कल्याण में महत्वपूर्ण योगदान है। बिहार के राज्यपाल डॉ. आरिफ मोहम्मद खान ने कहा कि विकास के लिए शांति आवश्यक है, भारत के सम्पूर्ण विकास के लिए अंतरधार्मिक संवाद एवं प्रयास आवश्यक है। मंत्री मंगलप्रभात लोढा ने कहा कि भारतीय संस्कृति में 'वसुधैव कुटुंबकम' एवं 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतुः निरामया' का संदेश पूरी दुनिया को दिया गया है। संगोष्ठी को बौद्ध भिक्षु भदंत राहुल बौधि, पूर्व डीजीपी पी. एस. पसरीचा, डॉ. विजय दर्डा ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में प्रदीप राठौर, पृथ्वीराज कोठारी, प्रकाश धारीवाल, उज्जवल पगारिया, विशाल चोरडिया, अनिल जैन, नितिन खारा आदि को सम्मानित किया गया।

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

Navratan Kumar Baid
Mob: 7989282716

406 East Marred Pally Manbhum Avlon Near Petrol Pump, Secunderabad, Hyderabad, Telangana- 500026

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर

हार्दिक शुभकामनाएं

पू. पिताजी
स्व. सेठ श्री माणकचंदजी सांखला
की पुण्य स्मृति पर श्रद्धा सुमन
(जेठाना -राज)

स्व. पू. माताजी
श्रीमती भंवर कंवर सांखला

Manish Flour Mill Pvt. Ltd.

रतनलाल सांखला जैन
मो: ९८२००२११७१

संबधित प्रतिष्ठान

मेरी डियन केम वोन्ड केमीकल	अंकलेश्वर
मेरी डियन फ्लोर मिल्स	आरोली थाना
यूरो डायमण्ड, डायमंड ज्वैलरी	अंधेरी, मुंबई
मनीष फ्लोर मिल्स	वड़ौदा, ताती थैया
शंखेश्वर फ्रूट प्रा. लि.	अहमदनगर
आदिनाथ फ्लोर मिल्स प्रा. लि.	जयपुर
नाकोडा स्पिनिंग मिल्स	वड़ौदा
टॉप फ्रूट उत्पादक प्रा. लि.	पल्प (सुपा)

535 पंचरत्न, ओपेरा हाऊस, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत- 400006

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

उपवासाची कारणे अनेक...
मात्र शाबुदाणा एक...

कॅमल इन्स्टन्ट
स्वच्छ, शुभ्र, निवडक व दाणेदार १ किलो व अर्धा किलोच्या पॅकमध्ये सर्व किराणा दुकानात उपलब्ध...

उपवासासाठी 'कॅमल' शाबुदाण्याचीच मागणी करा !

CAMEL SAGO
ATUL FOOD PRODUCTS

कॅमल®

सुपरफाईन शाबुदाणा

अशोक बन्सीलाल पारख
मो.09225322496
२२६२, 'कॅमल हाऊस', आडते बाजार, अहमदनगर. फोन : ०२४१-२३४३८९६, २३४११९६

अतुल फुड प्रॉडक्टस्
प्लॉट नं. २८, २९, इंडस्ट्रियल इस्टेट, नगर-पुणे रोड, अहमदनगर. फोन : ०२४१-२५५१८१९
Email : atulparakh76@gmail.com

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार,
महावीर प्रभु की जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर

हार्दिक शुभकामनाएं

Mahendra Sajjanraj Bafna
Mob: 8007571222

Raamah
GROUP

Corporate Office :
Raama Esquire, FF - 26 to 33, Near Old Octroi Post,
Beside Laxmipura Police Station, Gotri, Vadodara - 390021
email: mahendrabafna@raamah.in

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आरएमडी फाउंडेशन द्वारा निर्मित श्री तुलजा भवानी मंदिर के लिए पियाऊ जल परियोजना का उद्घाटन

पुणे: हर साल महाराष्ट्र और अन्य राज्यों से करोड़ों भक्त श्री तुलजा भवानी माता के दर्शन के लिए आते हैं। रसिकलाल एम. धारीवाल फाउंडेशन द्वारा 'प्याऊ-जल परियोजना' समर्पित करते हुए बहुत खुशी हो रही है, जिसका उद्देश्य श्रद्धालुओं को पेयजल सुविधा प्रदान करना तथा यह सुनिश्चित करना है कि श्रद्धालुओं को बारह महीने स्वच्छ और ठंडा पेयजल उपलब्ध हो यह बात कई आरएमडी की संचालिक शोभा आर. धारीवाल ने, इस अवसर पर रु. २६. ५० लाख रुपये की लागत से २,००० लीटर क्षमता का आरओ प्लांट स्थापित किया गया, ताकि मंदिर की चारों मंजिलों पर श्रद्धालुओं को ठंडा एवं शुद्ध जल उपलब्ध होगा। रामनवमी के पावन अवसर पर मैं सेवा भावना से यह प्रकल्प मां भवानी के चरणों में समर्पित करती हूं।

श्रीमती शोभा जी ने बताया कि आरएमडी फाउंडेशन ने भारत भर में विभिन्न स्थानों, जैसे सरकारी अस्पतालों, स्कूलों, कॉलेजों, सार्वजनिक पार्कों, बाजारों और धार्मिक स्थानों पर स्वच्छ और ठंडा पेयजल उपलब्ध कराया है।

विधायक एवं ट्रस्टी श्री राणा जगजीत सिंह पाटिल ने मंदिर के लिए 'पेयजल परियोजना' स्थापित कर आरएमडी फाउंडेशन के माध्यम से भक्तों को स्वच्छ और ठंडा पेयजल उपलब्ध कराने के लिए मंदिर और भक्तों की ओर से शोभाताई को साड़ी, श्रीफल और भवानी माता की एक तस्वीर भेंट करके सम्मानित और धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में उपविभागीय अधिकारी धाराशिव, तहसीलदार, कमांडेंट श्री तुलजा भवानी सैनिक विद्यालय, मंदिर के जनसंपर्क अधिकारी, प्राचार्य श्री तुलजाभवानी सैनिक विद्यालय, प्रदीप राठी, आकाश राठी अध्यक्ष लातूर अर्बन बैंक, चंदाकरण लड्डा, आरएमडी फाउंडेशन द्वारा निर्मित माढा वेल्फेअर फाऊंडेशन के माध्यम से शोभाताई धारीवाल किसान प्रशिक्षण केंद्र, जिसका उदघाटन जल्द ही होनेवाला है, उनके पदाधिकारी श्री महेश डोके और धनराज शिंदे के साथ अन्य गणमान्य व्यक्ति और भक्त बड़ी संख्या में कार्यक्रम में उपस्थित थे।

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार,
महावीर प्रभु की जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

DHANPAT BHANSALI YASH BHANSALI
Mob: 9323961945
H² BUILDERS
BHANSALI Group
Builder developers
A- Wing, 2Nd Floor, Sharda Bhawan, Nandapatkar Rd.,
Opp. Petrol Pump, Vile Parle East, Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400057
Ph: 022-32940462 / 022-26185801 F.: 022-26151718
Email: Bhansalidevelopers@Yahoo.Com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार,
महावीर प्रभु की जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

SUDHIR KANKARIA
B.Com.,FCA
Mob: 9444064327
S.KANKARIA & CO
No.4, D-Block, 2nd Floor, 2nd Avenue Extn.,
Anna Nagar East, Chennai, Tamil Nadu, Bharat- 600 102
email: s_kankaria_ca@yahoo.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय भारत! जय जिनेन्द्र!

भारत को 'भारत' ही बोलेंगे INDIA नहीं

विमलचंद धारीवाल
उपाध्यक्ष राजस्थान एसोसिएशन तमिलनाडु
पाली निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४४३३३२३३०

विमलचंद जी 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व के शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि यह दिन संपूर्ण जैन समाज के लिए सबसे बड़ा त्यौहार है, यह त्यौहार जैनत्व के प्रति एक नई ऊर्जा का संचार करता है, अपने आपको जागृत करने की व्यवस्था का दिन है, इस व्यवस्था का हम पालन करेंगे तो युवा पीढ़ी, जो आज अपने जैन धर्म के सिद्धांतों से भटक गई है, दूसरी दिशा में चल पड़ी है, उन्हें उचित मार्गदर्शन मिलेगा, हमारे सिद्धांतों के नियम की जानकारी मिलेगी, इसलिए ये त्योहार युवाओं के साथ मनाना चाहिए, युवाओं को जागृत करना चाहिए और जातिवाद को छोड़ना चाहिए, हम यदि इसी मार्ग पर चलते रहेंगे तो समृद्धि बढ़ेगी और विश्व शांति के लिए सबसे बड़ा कदम होगा, अतः युवाओं को धर्म व समाज से जोड़ना बहुत जरूरी है। जैन धर्म के सिद्धांतों को अपनाकर अन्य धर्म समाज के समूह के उत्तम उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं, इसीलिए समाज में एकता और युवाओं में जागृति की बहुत जरूरत है। 'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि आज हमारा समाज तेरा और मेरा की भावना में जकड़ा हुआ है, इस भावना को समाप्त करना बहुत जरूरी है, यदि हम जैन पंथ में बंटे रहेंगे तो हमें बहुत नुकसान होगा, हमारे लिए सभी संप्रदाय के गुरु-भगवंत, आचार्य वंदनीय होने चाहिए, यदि हम जमीनी धरातल से जुड़े रहेंगे तो अवश्य ही समाज में 'एकता' स्थापित हो सकती है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए। 'भारत' नाम में अपनत्व है, इंडिया तो विदेशियों द्वारा थोपा गया नाम है, हमारी ऐतिहासिक पहचान 'भारत' से है और 'भारत' से ही रहनी चाहिए!

विमलचंद जी मूलतः राजस्थान के 'पाली' जिले में स्थित 'बगड़ी' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'कर्नाटक' में संपन्न हुई है, यहां आप राजस्थान एसोसिएशन तमिलनाडु के उपाध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। करुणा इंस्टिट्यूट ऑफ़ नोबिलिटी एंड डेवलपमेंट में के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं, जैन वासुपूज्य मंदिर के ट्रस्टी व सचिव तथा एआईएसएस जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री के रुप में सक्रिय हैं। श्रावक संघ और ज़ितो से भी जुड़े हैं। करुणा, दया, अहिंसा, देशभक्ति और जीवदया के क्षेत्र में विशेष रूप से कार्य करना ही अपने जीवन का उद्देश्य समझते हैं। जय भारत!

- जिनागम

राजकरण बछावत
व्यवसायी व समाजसेवी
राजस्थान निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३०९१४५१५

राजकरण जी कहते हैं महावीर स्वामी जैन धर्म के २४वें और अंतिम तीर्थंकर हैं। तीर्थंकर महावीर ने अहिंसा, अनेकांतवाद, अपरिग्रह और तपस्या के महत्व पर जोर दिया, उनकी शिक्षाओं ने भारतीय दर्शन और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला। तीर्थंकर महावीर का संदेश आज भी लोगों को शांति, सद्भाव और आध्यात्मिक विकास के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। तीर्थंकर महावीर ने कहा था, बाहर कोई भी हमारा शत्रु नहीं है, असली शत्रु हमारे भीतर ही है। क्रोध, घमंड, लालच, मोह और ईर्ष्या हमारे सबसे बड़े शत्रु हैं, इनसे बचें। महावीर के सिद्धांतों पर चर्चा कर हम 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व को सार्थक कर सकते हैं।

आज के युवाओं को हमें यह समझना होगा कि वे एक बदलते हुए समाज में रहते हैं, जहां तकनीक, सोशल मीडिया और वैश्वीकरण ने उनके जीवन, विचारों और मूल्यों पर गहरा प्रभाव डाला है। आज के युवा जागरूक, शिक्षित और तकनीकी रूप से सक्षम हैं। वे समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए उत्साहित हैं और वे अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए खड़े होने से नहीं हिचकिचाते, आज के युवाओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे की तनाव, अवसाद और भविष्य की अनिश्चितता, इन चुनौतियों के बावजूद, आज के युवा अपने सपनों को पूरा करने और समाज में सकारात्मक योगदान करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम और पहचान 'भारत' ही रहना चाहिए। जय भारत!

- जिनागम

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मै भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!

पी. शिखरमल सुराणा (पी.एस. सुराणा)

सुराणा एंड सुराणा इंटरनेशनल अटोर्नीज, चेन्नई

**भ्रमणध्वनि: ९८८४४३०००० **

सुराणा एंड सुराणा इंटरनेशनल अटोर्नीज, चेन्नई के संस्थापक पी. शिखरमलजी सुराणा 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि आज विश्व को तीर्थंकर महावीर के सिद्धांतों की नितांत आवश्यकता है। तीर्थंकर महावीर के सिद्धांतों का अनुसरण करके जीवन और परिवार को अधिक सुखी बनाया जा सकता है, उनके बताए मार्ग पर चलकर समाज में सौहार्द, राष्ट्र में उन्नति और विश्व में शांति को प्रतिपादित किया जा सकता है, अतः उनके सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया जाना चाहिए। तीर्थंकर महावीर के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के लिए उनका जन्म कल्याणक एक अच्छा अवसर है।

चेन्नई में 'महावीर जन्म कल्याणक' के पुनीत अवसर पर समग्र जैन समाज की विशाल शोभायात्रा में हजारों की संख्या में श्रद्धालु भक्ति और उत्साह से भाग लेते हैं। दादावाड़ी में सभी संप्रदायों का संयुक्त समारोह होता है, कार्यक्रम के पश्चात स्वामी वात्सल्य का आयोजन किया जाता है।

'जैन एकता' के बारे में पी.एस. सुराणा जी का कहना है कि जैनों की जनसंख्या वैसे भी बहुत कम है और इसी तरह संप्रदाय और पंथ में बंटे रहेंगे तो हम कुछ भी हासिल नहीं कर पाएंगे, न राजनीतिक रूप में और न ही सामाजिक रूप में, इसलिए समाज में 'एकता' अत्यंत आवश्यक है। 'एकता' के लिए पहला कार्य यह होना चाहिए कि हमारे सभी त्यौहार एकसाथ-एकरूप में मनाए जाने चाहिए, भले ही हमारे आंतरिक रूप में मतभेद हों, पर बाहरी रूप में, भावात्मक रूप में हमें 'एकता' दिखानी होगी, तभी हमारा धर्म और समाज, दोनों सुरक्षित रहेंगे।

आज की युवा पीढ़ी को धार्मिक आराधनाओं और सामाजिक गतिविधियों में जोड़ना बहुत जरूरी है, इससे धर्म ऊर्जावान और अधिक रचनात्मक बनेगा।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में सुराणा जी का कहना है कि यह एक राजनीतिक मुद्दा है और यह राजनीतिज्ञों द्वारा ही सुलझाया जा सकता है। दक्षिण भारत में तो हिंदी का प्रचलन बहुत कम है, पर हमें अपनी पुरानी पहचान को भी नहीं खोना चाहिए।

राजस्थान में मूलतः नागौर निवासी ७५ वर्षीय शिखरमलजी का जन्म 'नागौर' में हुआ, शिक्षा 'चेन्नई' में हुई। आप एक विद्वान अधिवक्ता हैं तथा आपके परिवार के अधिकतर सदस्य अधिवक्ता के रूप में सक्रिय हैं। चेन्नई स्थित आपकी फर्म 'सुराणा एंड सुराणा इंटरनेशनल अटोर्नीज', दक्षिण भारत की विख्यात लॉ फर्म है, यह फर्म विधि और कानून के हर क्षेत्र में सेवाएं देती है।

आप मानवसेवा, जीवदया और परमार्थ के अनेक कार्यों में संलग्न हैं। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (जोधपुर) और सम्यगज्ञान प्रचारक मंडल (जयपुर) के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष पी.एस. सुराणा चेन्नई में राजस्थानी एसोसिएशन तमिलनाडु, राजस्थानी जैन संघ सहित अनेक संस्थानों से जुड़े हैं। जय भारत!

- जिनागम

सुशील बोहरा

क्षेत्रीय प्रधान श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

ब्यावर निवासी-तमिलनाडु प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४४३३५२८८४

सुशील जी 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि तीर्थंकर प्रभु महावीर की शिक्षा समस्त संसार के लिए प्रेरणा स्रोत है, उनके द्वारा बताए गए धर्म, सत्य, अहिंसा के मार्ग पर चलकर मुक्ति को प्राप्त किया जा सकता है, सभी जैन पंथी इसे बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं, पर मेरे भाव ऐसे है कि सर्वप्रथम सभी संप्रदायों में जो अलग-अलग रूप में 'महावीर जन्म कल्याणक' मनाया जाता है, वह एकसाथ-एकरूप में मनाया जाये, तो धर्म की महिमा और अधिक सुशोभित होगी। 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व को मनाने का उद्देश्य तभी सार्थक होगा, जब संप्रदायवाद छोड़ हम 'जैनत्व' को महत्व प्रदान करें।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से समाज में 'एकता' बहुत जरूरी है, आज हमारा समाज पंथ और संप्रदाय में बंटा हुआ है, जो हमारे समाज के भविष्य के लिए ठीक नहीं है। समाज में 'एकता' ना होने से सरकार द्वारा जैन समाज को जो महत्व मिलना चाहिए, वह नहीं मिल पा रहा, अतः समाज में 'एकता' होनी बहुत जरूरी है और इसके लिए सर्वप्रथम धर्म गुरुओं को, संघनायकों एकमंच पर सलाह कर निर्णय करना होगा।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी रहे, इसके लिए जिन परिवारों में बच्चों को संस्कार मिलता है, युवावस्था में भी अपने धर्म व समाज के प्रति समर्पित रहते हैं, युवाओं का धर्म और समाज से जुड़ना ही भविष्य की नींव दृढ़ करता है।

सुशील जी मूलतः राजस्थान स्थित 'ब्यावर' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा तमिलनाडु के 'तिरुवन्नामल्लै' में संपन्न हुई है, यहां आप आभूषणों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तमिलनाडु संभाग के क्षेत्रीय प्रधान के रूप में कार्यरत हैं, अन्य संस्थानों में भी आपका योगदान तन-मन-धन से रहता है। जय भारत!

- जिनागम

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

संघवी उत्तमचंद आच्छा

अध्यक्ष श्री सकल जैन संघ, मंजूनाथ नगर, बेंगलुरू
बिलावास निवासी-बेंगलुरु प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८४४३१०१४५

उत्तमचंद जी 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि तीर्थंकर महावीर स्वामी जी का जन्म उत्सव संपूर्ण जैन पंथों द्वारा बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है, हमारे यहां वरघोड़ा, शोभायात्रा निकाली जाती है, विभिन्न संस्कृतिक व धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, पर आज के समय इस पर्व को मनाने की परिभाषा बदल चुकी है, इस पर्व को मनाने का जो वास्तविक का उद्देश्य है उससे हम बहुत दूर हो चुके हैं, सिर्फ यह एक औपचारिकता भर रह गई है। महावीर स्वामी के सिद्धांतों को भूलते जा रहे हैं, इस पर्व को मनाने की सार्थकता तभी है, जब हम महावीर के सिद्धांतों को अपने जीवन में आत्मसात करके चलें, पर आज हम इन सब से दूर हैं। कार्यक्रम के दौरान होने वाले फिजूल खर्ची और ढकोसले बाजी से धर्म की हानि हो रही है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' तो आज हमारे समाज की सबसे बड़ी जरूरत है, इसका कारण है कि हम जनसंख्या में इतने कम हैं कि हमारे समाज का कोई महत्व ही नहीं है और आने वाली पीढ़ी धर्म में फैले पंथवाद व दिखावे से दूर होती जा रही है, सभी धर्म के ठेकेदार अपने-अपने राग अलापने में लगे हैं, सब अपने-अपने नाम लेने के चक्कर में भगवान का नाम लेना भूल जाते हैं, हमारी 'संवत्सरी' अलग-अलग दिन मनाई जाती है। साधु-संत एकसाथ-एकमंच पर आकर एक ही बात करें, तो अवश्य ही 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म समाज से विमुख हो रही है, क्योंकि समाज में फैले आडंबरों से युवा पीढ़ी दूर ही रहना चाहती है, इसलिए उनका जुड़ाव अपने धर्म और समाज के प्रति समाप्त होते जा रहा है, यदि धर्म से जुड़े कार्य हो तो ही युवा पीढ़ी जुड़ेगी।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, 'भारत' नाम हमारी संस्कृति से जुड़ा है, भावनाओं से जुड़ा है, इंडिया शब्द तो विदेशियों द्वारा दी गई पहचान है, हमारी वास्तविक पहचान 'भारत' से है और 'भारत' से ही रहनी चाहिए।

उत्तमचंद जी मूलतः राजस्थान के 'बिलावास' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। पिछले कई वर्षों से आप 'बेंगलुरु' में बसे हैं और रिटेल के कारोबार से संलग्न हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी विशेष रूप से सक्रिय रहते हैं। आपने 'बिलावास' में साधु-साध्वियों के लिए जैन भवन (उत्तम अंकित विल्ला) का भी निर्माण करवाया है, जिससे ग्राम वासियों को उनके दर्शन, वंदन, प्रवचन का लाभ मिल सके, इस भवन में मूर्तिपूजक, तेरापंथी, स्थानकवासी एवं दिगम्बर परंपरा के करीब ७५ ठाणा जिसमें २७५ साधु-साध्वी भगवंत पगलिये कर चुके है, बेंगलुरु के मंजूनाथ नगर में स्थापित सकल जैन संघ के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत! **- जिनागम**

विनय नाहटा

व्यवसायी व समाजसेवी
बालेसर निवासी-नगरी प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२५५६२१६२

विनय जी 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि संपूर्ण जैन पंथियों द्वारा 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व मनाया जाता है, पर आज अधिकांश लोग महावीर के बताए सिद्धांतों से विमुख होते जा रहे हैं। कुछ लोगों के लिए यह पर्व मात्र औपचारिकता रह गई है। 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व को मनाने का उद्देश्य तभी सार्थक होगा, जब हम महावीर के बताए सिद्धांतों का पूरी निष्ठा से पालन करें।

हमारे नगरी में १२० जैन परिवार निवास करते हैं और सभी के द्वारा 'महावीर जन्म कल्याणक' एकसाथ-एकरूप में मनाया जाता है, पहले प्रभात फेरी निकाली जाती है, तत्पश्चात सामूहिक प्रार्थना के पश्चात पचकखान और मंगल पाठ होता है और उसके बाद वरघोड़ा निकाला जाता है और समाज के प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाता है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है की 'एकता' तो बहुत जरूरी है, भले ही हमारे विचार अलग-अलग हों, पर सभी के मन में तीर्थंकर महावीर स्वामी है और उनके बताए संदेश हैं, उसे अपनाकर हम एकता की दिशा में बढ़ सकते हैं।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का एक नाम एक पहचान रहनी चाहिए 'भारत', इस अभियान का मैं समर्थन करता हूं।

विनय जी मूलतः राजस्थान स्थित 'बालेसर' के 'बेलवा' गांव के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा छत्तीसगढ़ के 'धमतरी' जिले में से 'नगरी' में संपन्न हुई है, यहां प्रोविजन स्टोर के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। पूर्व में युवा संघ के स्थानीय अध्यक्ष, श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के कार्य समिति सदस्य, जैन श्री संघ नगरी के कार्यकारिणी सदस्य, विगत कार्यकाल में श्री साधुमार्गी जैन संघ (छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल के) शिविर ट्रस्ट महामंत्री पद पर अपनी सेवाएं दी। क्षेत्र में विचरण हो रहे साधु संतों के विहार सेवा में भी सदैव तत्पर रहते हैं। जय भारत! **- जिनागम**

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

धनपत भंसाली
पूर्व कोषाध्यक्ष श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
जोधपुर निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३२३९६१९४५

धनपत जी 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि तीर्थंकर महावीर स्वामी हमारे आराध्य हैं, उनके बताए संदेश और उपदेशों का ही समस्त जैन पंथी अनुकरण करते हैं, उनके जन्म पर्व को संपूर्ण जैन समाज बड़े ही उत्साह से मनाता है, पर इस पर्व को मनाने का उद्देश्य तभी सार्थक होगा, जब हम तीर्थंकर महावीर के सिद्धांतों को अपने जीवन में आत्मसात करें और अपने बच्चों को भी उनके सिद्धांतों और जीवनी से अवगत कराएं, जिससे वे अपने धर्म और समाज को समझें, क्योंकि आज के बच्चे प्रैक्टिकल बातों में ज्यादा विश्वास रखते हैं, जैन धर्म एक वैज्ञानिक धर्म है और इसी वैज्ञानिकता के आधार पर हम बच्चों को अपने धर्म और समाज से जोड़ सकते हैं। जन्म कल्याणक पर्व के माध्यम से महावीर के बताए उपदेशों के प्रति जागृति रहती है, इसीलिए आज भी 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व की सार्थकता बनी हुई है और इसे समस्त जैन पंथावलम्बियों को पूरी निष्ठा और उत्सव के साथ मनाया जाना चाहिए।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'एकता' हर समाज और धर्म के लिए जरूरी है। हमारे तीर्थंकर एक हैं, णमोकार मंत्र एक है, शास्त्र एक हैं, तो यह पंथवाद क्यों? कुछ तिथियों की भिन्नता के कारण आज हमारा समाज पंथ और संप्रदाय में बंटा हुआ है, हमारे पर्व अलग-अलग मनाए जाते हैं, यह सब समाप्त होना चाहिए, जिन मुद्दों पर हम 'एक' हो सकते हैं, उनमें हमें एकता दिखानी चाहिए, हमारे गुरु भगवंतों को एकमंच पर आकर एक निर्णय लेना चाहिए, जिससे समस्त जैन समाज में 'एकता' स्थापित हो सके।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विमुख हो रही है, यदि परिवार में उन्हें संस्कार प्राप्त होते हैं तो युवा वर्ग अवश्य अपने धर्म समाज से जुड़ेगा। जैन धर्म के सिद्धांतों व नियमों को आधुनिक परिपेक्ष के रूप में युवाओं को समझाया जाए तो युवा वर्ग में भी धर्म के प्रति जागृति निर्माण होगी।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि यह तो जरूरी है कि अपने देश का एक नाम, एक पहचान रहनी चाहिए, क्योंकि यह भरत चक्रवर्ती की भूमि है, जिनके नाम से इस देश का नाम 'भारत' पड़ा।

धनपत जी मूलतः जोधपुर के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। पिछले कई वर्षों से आप 'मुंबई' में बसे हैं और भवन निर्माता के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष रहे हैं, वर्तमान में कई संस्थानों में ट्रस्टी की भूमिका निभा रहे हैं, स्थानक का भी निर्माण करवा रहे हैं, अन्य कहीं सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

- जिनागम

महेंद्र बाफना
क्षेत्रीय प्रधान गुजरात संभाग श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
भोपालगढ़ निवासी-वडोदरा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२२७७३४११

महेंद्र जी 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व संपूर्ण जैन समाज के लिए उत्सव का पर्व है, यह पर्व तभी सार्थक है, जब हम महावीर के सिद्धांतों और उपदेशों को अपने आचरण में लाएं। समाज द्वारा 'महावीर जन्म कल्याणक' के दिन कई धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, प्रभात फेरी निकाली जाती है, पूजा अर्चना की जाती है, जिसमें समाज के सभी वर्ग सम्मिलित होते हैं और धर्म की प्रभावना बढ़ती है, आज की स्थिति में ऐसे पर्व की समाज को बहुत जरूरत है, जिससे लोगों में अपने धर्म और समाज के प्रति जागृति बनी रहे।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'एकता' तो जरूरी है, पर यह असंभव लगता है, क्योंकि समाज कई पंथ और संप्रदायों में बंटा है और सभी अपना अपना राग अलापने में लगे हैं तो 'जैन एकता' कैसे स्थापित हो सकती है, इसके लिए सर्वप्रथम हमारे गुरु भगवंतों को ही प्रयास करना होगा।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज के प्रति कम ही रुझान रखती है, वह अपने जीवन शैली में इतना व्यस्त है कि उनके पास अपने धर्म और समाज के लिए समय ही नहीं है, युवाओं को मार्गदर्शन मिले तो वे अवश्य ही अपने धर्म और समाज से जुड़ेंगे।

महेंद्र जी मूलतः राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित 'भोपालगढ़' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले कई वर्षों से आप गुजरात के वडोदरा में बसे हुए हैं और व्यवसाय में संलग्न हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ गुजरात संभाग के क्षेत्रीय प्रधान के रूप में कार्यरत हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

- जिनागम

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

सुधीर कांकरिया

उपाध्यक्ष जैतारण पट्टी ओसवाल संघ तमिलनाडु
जैतारण निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४४४०६४३२७

सुधीर जी 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व जैन समाज का सबसे बड़ा पर्व है, क्योंकि यह हमारे २४वें तीर्थंकर महावीर स्वामी जी का अवतरण दिवस है, इस पावन दिन को महावीर स्वामी के सिद्धांत और आदर्शों को याद कर के मनाया जाना चाहिए। महावीर के चरित्र का आंकलन कर समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर जागृत किया जाना चाहिए। चेन्नई में अलग-अलग संस्थाओं द्वारा अपने-अपने स्वरूप में 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व मनाया जाता है, सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जप-तप किए जाते हैं, वरघोड़ा निकाला जाता है और यह वरघोड़ा चेन्नई में सबसे भव्य रूप में आयोजित होता है, जिसमें लगभग ५ से ७ हजार जैन बंधु उपस्थित होते हैं, पर आज यह भी देखने में आया है कि 'महावीर जन्म कल्याणक' सिर्फ एक औपचारिकता भर रह गई है, हम महावीर के सिद्धांतों को भूलते जा रहे हैं, होने वाले आयोजन में समाज का खर्च बहुत होता है, पूंजीपतियों का ही वर्चस्व रहता है, इस पर समाज को विचार करना चाहिए।

'जैन एकता' बहुत जरूरी है, क्योंकि हमारा समाज संख्या में बहुत कम है, हम पंथों में बंटे हैं, जिसके कारण हमारी आवाज नहीं सुनी जाती, हमारे त्योहार अलग-अलग मनाए जाते हैं, जबकि सभी पर्व एकसाथ-एकरूप में मनाए जाने चाहिए, इसके लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा, तभी 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है, विशेषकर हमारे गुरु भगवंतों को इस दिशा में कार्य करना होगा।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म समाज से विमुख होती जा रही है, वह अंर्तजातीय विवाह, पाश्चात्य सभ्यता की ओर अग्रसर है, अतः युवाओं को अपने धर्म व समाज से जोड़ने का प्रयास किया जाना चाहिए, इस पर विचार करना चाहिए।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक नाम, एक पहचान रहनी चाहिए 'भारत'! इस राष्ट्रीय अभियान का मैं समर्थन करता हूं।

सुधीर जी मूलतः राजस्थान स्थित 'जैतारण' में स्थित 'आगेवा' गांव के निवासी हैं। आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा आपने 'अजमेर' से ग्रहण की है और चार्टर्ड अकाउंटेंट की शिक्षा आपने 'चेन्नई' से ग्रहण की है, ३५ वर्षों से प्रैक्टिस कर रहे हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जैतारण पट्टी ओसवाल संघ तमिलनाडु के अंतर्गत जैतारण क्षेत्र के १४४ गांव सम्मिलित हैं, उपाध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं। ब्यावर संगठन तमिलनाडु के पूर्व सचिव पद पर रहे हैं, राजस्थान युथ संगठन मेट्रो के अध्यक्ष रहे हैं। राजस्थानी संगठन तमिलनाडु के पूर्व सहसचिव पद पर भी सेवाएं दे चुके हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

- जिनागम

मुकेश जैन

व्यवसायी व समाजसेवी
हरियाणा निवासी-पटनागढ़ प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३७२१०२०७

मुकेश जी 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि विश्व शांति की स्थापना और जीवन रक्षा के लिए महावीर की शिक्षाओं का अद्भुत योगदान है। तीर्थंकर महावीर ने विश्व में अहिंसा का प्रचार-प्रसार किया, उन्होंने जनमानस के हित के लिए 'जियो और जीने दो' का संदेश दिया जो आज के परिपेक्ष में बहुत ही सार्थक है। महावीर के आदर्शों पर चलकर ही समाज सुधार और जन्म कल्याणक को सार्थक कर सकते हैं, तभी महावीर स्वामी के सिद्धांतों को आत्मसात करके ही अपने जीवन को सफल बनाया जा सकता है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'एकता' संभव होगी, ऐसा लगता नहीं है, क्योंकि आज सभी संप्रदाय अपनी-अपनी विचारधारा और संप्रदायों में बंटे हैं तो ऐसे में 'एकता' कैसे स्थापित होगी, एकता स्थापित करने के लिए गुरु भगवंतो का सानिध्य बहुत जरूरी है, उनके ही दिशा निर्देश में 'जैन एकता' स्थापित की जा सकती है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक नाम, एक पहचान रहनी चाहिए 'भारत'!

मुकेश जी मूलतः हरियाणा के 'हिसार' निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा उड़ीसा के 'पटनागढ़' में संपन्न हुई है, आपका परिवार यहां चार-पांच पीढ़ियों से बसा हुआ है, यहां आप गिनिंग मिल व अन्य कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही आप विभिन्न जैन समाज की संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं, तेरापंथ समाज में सक्रिय हैं। जय भारत!

- जिनागम

संसार की समस्त सम्पदा और भोग के साधन भी मनुष्य की इच्छा पूरी नहीं कर सकते हैं।
- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन को बिगाड़ने वाली है, इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।
- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है, उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।
- उपाध्याय मान

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

जीयो ओर जीने दो के जयकारों से गूंजा महानगर

कोलकाता: १० अप्रैल, तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व के शुभावसर पर रविन्द्र सरणी स्थित श्री दिगम्बर जैन नया मन्दिर से श्री महावीर जयन्ती समारोह समीति कोलकाता के तत्वाधान में निकली ऐतिहासिक विशाल शोभा यात्रा प्रात: ८ बजे निकली, यह विराट शोभायात्रा कोलकाता के विभिन्न मार्गों से होती हुई प्रात: ११:३० बजे श्री दिगम्बर जैन नया मन्दिर पहुंची, तत्पश्चात वहां पाण्डुक शिला पर तीर्थंकर महावीर का अभिषेक हुआ।

शोभायात्रा में सुमेरु पर्वत पर महावीर जन्माभिषेक, गर्भ कल्याणक, श्रावक के अष्ट मूलगुण, आचार्य मांगतुंग द्वारा रचित भक्तामर स्त्रोत के ४८ काव्य पकड़ी महिलायें, कुंडलपुर के बड़े बाबा, मैना सुंदरी, महावीर का झुलनोत्सव, एरावत हाथी, तीर्थंकर प्रभु के जीवन में घटित घटनाओं व उपदेशों पर आधारित झांकी, प्रभु महावीर का पावन सन्देश का साक्षात्कार करा रही थी, इसके अलावा घोड़ों पर इन्द्र और इन्द्राणी के भेष में बच्चे विराजमान थे। झांकियों को देखनें के लिए सड़क के दोनों ओर ऐतिहासिक भीड़ जुटी, जगह-जगह वीर प्रभु के जन साधारण द्वार, झूम-झूम कर महाआरती करने का दृश्य, श्री दिगम्बर जैन बालिका विद्यालय के छात्रों द्वारा राष्ट्रीय एवं धार्मिक धुनों पर बजाए गए बैंड बाजे लोगों को विशेष आकर्षित कर रहे थे। शोभायात्रा में शामिल हजारों श्रद्धालुओं का शिकंजी, शरबत, डाब, गन्ने का रस आदि पेय पदार्थों से स्वागत किया गया।

इस दौरान सुप्रभात मंडल हावड़ा, राजुल महिला मंडल बंगवासी, अनुप्रेक्षा, काकुड़गाछी आदि पारस मंडल बेलगछिया, दीपशिखा बड़ाबजार, श्री दिगम्बर जैन महिला परिषद नया मन्दिर, मुमुक्षु मण्डल ने मंगल गीत व भजन गाए।

महर्षि देवेन्द्र रोड, नलिनी सेठ रोड, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट को स्वागत द्वारों, तोरण-बैनर एवं जैन ध्वजों से विशेष रुप से सजाया गया। पुष्पांजलि संस्था द्वारा अपने कार्यालय के सामने महावीर नगर बनाया गया, मंच पर परम पूज्य १०५ सुयोग्य नंदिनी माता जी अपने पूरे संघ के साथ विराजमान थी, जहाँ से उन्होंने शेभायात्रा का अवलोकन किया और अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया, इस महावीर नगर में इन्द्र-इन्द्राणियों के भेष में सदस्यों ने तीर्थंकर महावीर स्वामी की आरती की और भजनों की अमृत वर्षा की गयी। रथ पर श्रीजी को लेकर बैठने का सौभाग्य जैनेन्द्र जी लुहाड़िया, रोकडिया मुन्नालाल जी पहाडिया, सारथी अशोक जी बड़जात्या परिवार को मिला। शोभायात्रा को सफल बनाने में नये मन्दिर जी के सभापति राजेन्द्र गंगवाल, मंत्री श्रवण कुमार जैन, कोषाध्यक्ष मनीष कुमार जैन संयोजक जितेन्द्र काला, संतोष ठोलिया, श्रेयांस कुमार जैन, सुरेन्द्र दगड़ा, अजय जैन, अजय रारा, संजय पाटनी, अरुण काला, राकेश पाटोदी, धीरेंद्र गंगवाल, अभिषेक गंगवाल, हरीश जैन, अशोक पाटनी, संजय छाबड़ा, सुशील बड़जात्या विशेष सक्रिय रहे।

- जिनागम

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार,
महावीर प्रभु की जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

विनय नाहटा
मो. ९४२५५६२१६२

विजय नाहटा
मो. ९३०२१९२५५१

वीरम् स्टोर्स

दैनिक उपभोग, जनरल, आयुर्वेदिक, पूजा एवं जचकी समान

शुद्ध आहार शाकाहार

दैनिक बाजार के सामने नगरी,
छत्तीसगढ़, भारत-०७७००-२५१२८२

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जीयो और जीने दो के विचारक तीर्थंकर
महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

❖ हम है आपके अभिनन्दनकर्ता व वन्दनकर्ता ❖
श्री सकल जैन संघ मंजुनाथनगर, बेंगलोर

संघवी उत्तमचन्द आच्छा	विनोद मेड़तवाल	राकेश दलाल	रेखराज सांड बोहरा
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	मंत्री	कोषाध्यक्ष

सहमंत्री गण - सुरेश बाघमार, चेतन झारमुथा, राजेश कोठारी

श्री सकल युवा मित्र मंच

संघवी अंकित आच्छा	विनोद भंसाली	प्रितेश खाबिया	दिनेश छाजेड़	CA कल्पेश नाहर
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	मंत्री	सहमंत्री	कोषाध्यक्ष

श्री सकल जैन महिला मंडल

संघवणी पुष्पादेवी आच्छा	गीता धानेशी	सोनिका कोठारी	सुशीला बाघमार	अनिता कोठारी
अध्यक्षा	उपाध्यक्षा	मंत्री	सहमंत्री	कोषाध्यक्ष

सौजन्य कर्ता: संघवी उत्तमचन्द अंकित कुमार आच्छा, मंजूनाथनगर, बैंगलोर- १०

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार,
महावीर प्रभु की जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

पी. शिखमल सुराणा (पी.एस. सुराणा)
मो.: ९८८४४३००००

SURANA & SURANA
International Attorneys

सुराणा एंड सुराणा इंटरनेशनल अटोर्नीज
इंटरनेशनल लॉ सेंटर

६१-६३, डॉ. राधाकृष्णन रोड, चेन्नई, तमिलनाडु, भारत-६००००४
फो.: ०४४-२८१२००००

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

SVIDHA

S. Vimalchand Dhariwal
National General Secretary, AISS Jain Conference
Mob.: 9443332330

56, Bhagawan Mahaveer Street,
Arakkonam, Tamil Nadu, Bharat - 631001
Tel.: 04177 232 220, 232330, 232440,
New Delhi Off.: 011-23363729 / 23365420
email: svidha@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Intensive

• Investment Banking • NBFC • Family Office

~ Unique Advice. Capital Market Insight, Efficient Execution, Delivering Financial Growth

~~~ **Our Services** ~~~

- Public Issue (IPO)
- M&A / Strategic Acquisition
- Wealth Management & Advisory
- Right Issue / Buy-Back
- Takeover / Open Offer
- Valuation & ESOP
- Private Equity
- QIP Placement
- Pre-IPO Placement
- Debt Syndication
- Amalgamation & Demerger
- Financial Engineering

Intensive Fiscal Services Private Limited

RO: - 914, Raheja Chambers, Free Press Journal Marg, Nariman Point, Mumbai –400021, India,
Tel: +91-22-22870443 / 44 / 45, **Contact Person:** Virendra Bajaj +91 9699292100
Email: admin@intensivefiscal.com , Web: www.intensivefiscal.com
~~~

पधारो म्हारे देश

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मेरा राजस्थान

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

राजस्थान का इतिहास
पहुँचाए आपके हाथ

मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना

भारत का एक राज्य राजस्थान का एक जिला

1 प्रति ₹ 100/- **भोपालगढ़** 1 प्रति ₹ 100/-

के इतिहास की प्रति मंगवाने के लिए संपर्क करें:- 022-28509999

सम्पादक

बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

विशेष छूट

विज्ञापन देने पर पूरे साल 'मेरा राजस्थान' पत्रिका मुफ्त

वार्षिक शुल्क १२००/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

Remove 'INDIA' Name From The Constitution

Postal Registration Number - MCN/192/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2024-26
Published on 09th April 2025 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

ADD Gel®

ACHIEVER®

THE WORLD'S FINEST GEL PEN

Non Dry
NOW...UPTO 2 YEARS

ONLY ₹50/- PER PC

LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

Presenting New ADD Gel Achiever, the world's finest gel pen.With improved dye base ink that stays Non-Dry for up to 2 years.For smoother, effortless writing.

www.addpens.com

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598